



सत्यमेव जयते



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

नव इन्ड्रप्रसाद

2024 ★ अंक - 5



कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा

उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य

ऑफिट भवन, आई.पी. एस्टेट

नई दिल्ली - 110002

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार 2022-23 (मंत्रालयों / विभागों के लिए)

म पुरस्कार

नियंत्रक एवं
प्रबोचना का

प्रबोचना का

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरी
भारत की सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्था



मुख्यालय के श्री भवानी शंकर, महानिदेशक (राजभाषा) तृतीय
अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, पुणे में 300 से अधिक
मंत्रालय/विभागों की श्रेणी में वर्ष 2022-23 के लिए राजभाषा
कीर्ति प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए



हिंदी पखवाड़ा-2023 के समापन समारोह के दौरान महानिदेशक
महोदया हिंदी पखवाड़ा आयोजन समिति के सदस्यों के साथ



नव इन्ड्रप्रसाद

मूल्यः राजभाषा के प्रति निष्ठा

अंक - 05

वर्ष - 2024

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
ऑडिट भवन, आई.पी. एस्टेट
नई दिल्ली - 110002

नव इंद्रप्रस्थ

2024 ★ अंक - 5

पत्रिका परिवार

संरक्षक



श्रीमती एस. आह्लादिनी पंडा
महानिदेशक (लेखापरीक्षा)



परामर्शदाता
श्री हर्ष कपूर
निदेशक (प्रशासन)

संपादक



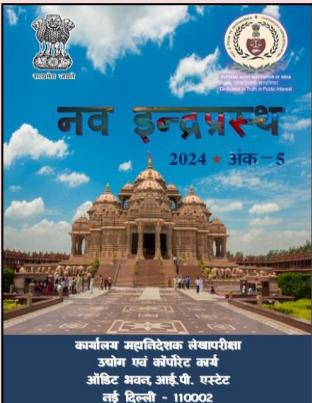
श्री राजबीर
हिंदी अधिकारी



डिजाइनर
श्री मोनू जांगिड
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य,
ऑडिट भवन, आई.पी. एस्टेट, नई दिल्ली - 110002

आवरण पृष्ठ:
अक्षरधाम मंदिर, नई दिल्ली



वार्षिक पत्रिका

वर्ष 2024, अंक-5

संरक्षक

श्रीमती एस. आह्लादिनी पंडा
महानिदेशक (लेखापरीक्षा)

परामर्शदाता

श्री हर्ष कपूर
निदेशक (प्रशासन)

संपादक

श्री राजबीर
हिंदी अधिकारी

डिजाइनर

श्री मोनू जांगिड़
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
ऑफिट भवन, आई.पी.एस्टेट
नई दिल्ली - 110002

विषय सूची

क्र. सं.	रचना/लेख का शीर्षक	रचनाकार/लेखक का नाम	पृष्ठ सं.
1	बचपन	हेमलता शर्मा	1
2	हम हैं सरकारी कर्मचारी	रोहित माथुर	2
3	बेटी	भूपेन्द्र राणा	4
4	(i) सुनो लड़की/सुनो लड़के (ii) मैंने रईसी देखी है	कविता स्वामी	5
5	(i) भारत: एक विश्वगुरु (ii) आत्मनिर्भर	समीर आसिफ	7
6	मेरा मानना है	मानवेन्द्र झा	9
7	स्त्री - अस्तित्व की पहचान	प्रिया शर्मा	11
8	परवरिश	अनिल कुमार	12
9	बजट	मानवेन्द्र झा	14
10	पक्षी और वातावरण	आनंद मठपाल	16
11	नव युवकों में बॉडीबिल्डिंग का बढ़ता क्रेज - एक नई जीवन शैली	रितेश कुमार	19
12	व्यापार अवश्य करें किंतु बुद्धि को व्यापरी ना बनाए	हेमलता शर्मा	21
13	बच्चों के लिए समर कैंप का महत्व	रितेश कुमार	23
14	क्या यह संसार असत्य है?	शुभम शर्मा	25
15	ई-ऑफिस का परिचय	हेमराज मीना	27
16	ऋषिकेश और हरिद्वार की यात्रा: एक अद्भुत एवं रोमांचकारी अनुभव	श्रीकांत	34
17	पहला सिनेमा अनुभव: राजमंदिर सिनेमा में "बेटा"	लाजबाला	41
18	देश बदल रहा है	मोहन चन्द्र	43
19	सफर रेलवे पुल से भाषाई पुल (अनुवाद) तक का	मोनू जांगिड़	45

नोट: इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं। नव इन्द्रप्रस्थ परिवार का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता, उसमें प्रस्तुत तथ्यों तथा आंकड़ों की प्रमाणिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



महानिदेशक (लेखापरीक्षा) का संदेश...

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका “नव इन्द्रप्रस्थ” का अंक-5 प्रकाशित किया जा रहा है। हिंदी संघ सरकार की राजभाषा होने के कारण यह हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम हिंदी के विकास के लिए निरंतर प्रयास करते हुए इसे ओर सहज-सरल बनाएं तथा इसे गतिशीलता प्रदान करें। यह पत्रिका न केवल हिंदी में कार्य करने और हिंदी को उपयोग में लाने के लिए प्रेरित करती है बल्कि कार्मिकों की रचनात्मकता की अभिव्यक्ति को मंच भी प्रदान करती है।

मुझे यह आशा ही नहीं अपितु अटल विश्वास है कि “नव इन्द्रप्रस्थ” का यह अंक भी हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग में प्रेरणादायक सिद्ध होने के साथ ही इसके पाठकों का असीम स्नेह भी प्राप्त होगा। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल तथा सभी रचनाकारों को बधाई देती हूँ।

रुद्र. पंडा

एस. आहादिनी पंडा
महानिदेशक (लेखापरीक्षा)



सत्यमेव जयते



निदेशक (प्रशासन) का संदेश...

कार्यालय की हिंदी पत्रिका “नव इन्द्रप्रस्थ” के नवीनतम अंक (5वां) का प्रकाशन प्रसन्नता का विषय है। कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रति निष्ठा की भावना को मजबूत करने एवं इसे समृद्ध बनाने में “नव इन्द्रप्रस्थ” पत्रिका की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। कार्यालय में हिंदी न केवल कामकाज की भाषा है अपितु कार्मिकों की सृजनात्मकता को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम भी है। कार्यालय में अधिक से अधिक कार्यों को हिंदी में निष्पादित करना हमारा संवैधानिक दायित्व है जिसका पालन हमारे कार्यालय में पूरी प्रतिबद्धता से किया जा रहा है।

पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा को पल्लवित और पुण्यित करने का सफल प्रयास है। पत्रिका के सफल प्रकाशन में अपना अमूल्य योगदान देने वाले कार्मिकों, संपादक मंडल एवं अन्य सदस्यों को हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ। आशा है कि राजभाषा हिंदी पत्रिका “नव इन्द्रप्रस्थ” का यह अंक सभी पाठकों के हृदय को स्पर्श करेगा।

हर्ष कपूर
निदेशक (प्रशासन)



सत्यमेव जयते



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

संपादक की कलम से....

हम गर्व और उल्लास के साथ आपके समक्ष कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका “नव इन्द्रप्रस्थ” का 5वां अंक प्रस्तुत करने के लिए उत्सुक हैं। इस अंक के माध्यम से हम अपने यात्रा के नए पड़ाव पर पहुँच चुके हैं, और यह सब आपकी भागीदारी और समर्थन के बिना संभव नहीं हो पाता। इस विशेष अंक में हमने आपके लिए तैयार किया है एक नई और ताज़ा अनुभव की दुनिया। यहाँ आपको मिलेंगे कार्यालय की नई उपलब्धियाँ, रोमांचक कहानियाँ, प्रेरक विचार और हमारी सामूहिक सफलता की झलकियाँ। यह अंक सिर्फ एक पत्रिका नहीं, बल्कि हमारे मेहनती कर्मचारियों की मेहनत, समर्पण और एकता की कहानी है।

आपके द्वारा दिए गए सुझावों और विचारों को ध्यान में रखते हुए, हमने इस बार की पत्रिका में अधिक रोचक और ज्ञानवर्धक सामग्री शामिल की है। हमें आशा है कि यह अंक आपके कार्यक्षेत्र में ऊर्जा और प्रेरणा का संचार करेगा।

मैं इस अवसर पर हमारे सभी लेखकों, संपादकों और सहयोगियों का धन्यवाद करता हूँ, जिनके अथक प्रयासों से यह अंक आकार ले पाया। आपकी सक्रिय भागीदारी और सतत समर्थन से ही हम इस पत्रिका को बेहतर बना पा रहे हैं।

हम आपके उत्साह और समर्थन की अपेक्षा रखते हैं और आशा करते हैं कि यह अंक आपके दिल को छू सके। कृपया अपने विचार और सुझाव हमारे साथ साझा करें ताकि हम निरंतर बेहतर से बेहतर बनाने की दिशा में अग्रसर रह सकें।

आप सभी को बधाई और शुभकामनाएँ!

राजबीर
हिंदी अधिकारी



हेमलता शर्मा
लेखापरीक्षक

बचपन

एक इच्छा है भगवान मुझे सच्चा बना दो,
लौटा दो बचपन मेरा मुझे बच्चा बना दो।
बचपन की बात ही कुछ निराली थी,
जब घाव दिल पर नहीं हाथ-पैरों में हुआ करते थे॥

वो बचपन क्या था जब हम दो रूपये में,
जेब भर लिया करते थे।
वो वक्त ही क्या था जब हम रोकर,
दर्द भूल जाया करते थे॥

माना बचपन में झरादे थोड़े कच्चे थे,
पर देखे जो सपने, वही तो सच्चे थे।
वो भी क्या दिन थे जब हम बच्चे थे,
बचपन के दिन भी कितने अच्छे थे॥

जहाँ चाहा वहाँ हँस लेते थे,
जो मन में होता वही किया करते थे।
अब मुस्कान को तमीज़ चाहिए और आसुंओं को तन्हाई,
ना जाने कैसी है ये बचपन से रुसवाई॥

दौड़ने दो खुले मैदानों में इन नन्हे क़दमों को जनाब,
जिंदगी बहुत तेज़ भागती है बचपन गुजर जाने के बाद।
बचपन की वो यादें अब भी आ जाती हैं,
रोते हुए पलों में वो अब भी हँसा जाती है॥





रोहित माथुर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हम है सरकारी कर्मचारी

“एक-एक रुपये का हिसाब मांगती है हमारी नारी
हर वक्त खर्चा कम करने की कोशिश है हमारी जारी
सैलरी आते ही कट जाती है किस्तें सारी
ना करते हैं कोई नशा ना हम जवारी
फिर भी महीने के आखिर तक बन जाते हैं भिखारी”

“घर के काम में रहती है पूरी भागेदारी
बीवी का डर नहीं, निभाते हैं जिम्मेदारी
करते हैं सारा काम भाड़ में जाये दुनियादारी
काम करके दिखा देते हैं समझदारी
नहीं तो कलेश रहता है नौन स्टॉप जारी”

“ना करना पड़े खर्चा ना जेब कटे हमारी
ना रखते हम कैश ना रखते जेब भारी
हर मौके पर पार्टी मांगने की है हमे बीमारी
आखिर तक रखते हैं पार्टी के लिए बार-बार टोकना जारी
फिर भी फसते नहीं जाल में, बेशक हो जाये बेजजती भारी”

“सुबह-सुबह पकड़ के आते हैं बस-ट्रेन सरकारी
सस्ती से सस्ती पकड़ते हैं सवारी
कहीं जाने से पहले कर लेते हैं कैलकुलेशन सारी
कर देते हैं जाना कैन्सिल अगर खर्चा हो भारी”

“जहाँ मिलता है महंगा समान सस्ता
होता है मालूम हमको वहाँ का रास्ता
डिस्काउंट देने वाला दुकानदार है हमको जचता
धोखाधड़ी करने वाला ना हमसे बचता
हेरा-फेरी करने वाला ऑडिट में फँसता
अगर झूठी होती मेरी कविता पढ़ कर एक भी ना हँसता
हमें पहले से ही मालूम होता है कितने प्रतिशत बढ़ेगा महंगाई भता”

“मेरी कविता को सुनके ना होना कन्फ्यूज
सरकारी नौकरी वाला नहीं होता कंजूस
रहता है अपडेट सुनता है ताजा-ताजा न्यूज
सुबह जल्दी उठ कर पीता है फ्रेश जूस
दिखता है सिंपल करता है माइंड का फुल यूज”

“सरकारी नौकरी वाले की डिमांड है भारी
पूरा परिवार चाहता है जमाई सरकारी
जिसको मिलता है लकी होती है वो कवारी
दिखने में सिंपल मगर सेविंग्स होती है भारी”

देखो समझो बात हमारी,
हिंदी भाषा है सबसे प्यारी



भूपेन्द्र सिंह राणा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

बेटी

सबकी किस्मत में कहाँ है बेटी
किस्मत वालों के घर में जन्म लेती है बेटी।

माँ लक्ष्मी का रूप है बेटी,
माँ दुर्गा का रूप है बेटी।
सुबह की रोशनी है बेटी,
रात की चांदनी है बेटी।

ममता की मूर्त है बेटी,
कभी-कभी माँ जैसी भी बन जाती है बेटी।

जन्म लेते ही सब कहते हैं परायी है बेटी,
पर अपनों को कभी नहीं भूलती है बेटी।

नये-नये रिश्तों को बनाती है बेटी,
दूसरे के घर का चिराग जलाती/वंश बढ़ाती है बेटी।

भूख लगने पर माँ और गलती करने पर पिता बन जाती है बेटी,
बहन तो है ही जरूरत पड़ने पर भाई भी बन जाती है बेटी।
सुबह-शाम काम करके पूरे परिवार को संभालती है बेटी,
फिर भी “मैं थक गयी” नहीं बोलती है बेटी।

जब मैं निराश होता हूँ मेरी आशा की किरण बन जाती है बेटी,
उमा, रमा, ब्राह्मणी अर्धशिव का रूप है बेटी।

फिर भी पता नहीं क्यों होती इतनी भूष हत्या,
क्या पृथ्वी पर इतना बड़ा पाप है बेटी?





कविता स्वामी
लेखापरीक्षक

सुनो लड़की/सुनो लड़के

सुनो लड़की...

जब ब्याह के ससुराल जाओ तो सास ससुर को माँ-बाप सी इज्जत और प्यार देना,
कुछ कह दे वो अगर तो नसीहत समझ कर मान लेना,
सर झुका कर सदा ही उन्हें अपने प्यार से अपना बना लेना।

अपने हमसफर की हमेशा परछाई बनना,
उसे इतनी आजादी देना के वो अपना दिल तुम्हारे सामने खोल कर रख दे किसी किताब की
तरह, तुम अपनी प्रेम रूपी स्याही से पन्नों को सजा देना।

अगर कभी वो हो गमगीन, तो उसका हाथ थाम कर उसके गले लग जाना
ज्यादा सवाल ना करना बस उसे तुम्हारे सामने दिल खोल कर रोने की सहजता देना।

देखना वो एक बच्चे की तरह तुमसे लिपट जाएगा,
तुम्हें दिल का हाल बयां कर देगा।

जिंदगी बड़ी ही हसीन होगी गर कोई प्रतिस्पर्धा ना रख
दोनों जीवन को गुलजार बनाओगे
इस गुलजार के फूल सदा ही जीवन को महकाएंगे
बस अपने दिल को प्यार से भर कर इस गुलजार को सींचना।

सुनो लड़के...

जब किसी लड़की से शादी का रिश्ता कायम हो
तो गहने नहीं, उसके लिए इज्जत लेकर जाना।

जब आओ उससे मिलने तो एतबार लेकर जाना
उसे भरोसा दिलाना के तुम उसके हर सुख-दुख में
उसके साथे की तरह साथ रहोगे।

उसके लक्ष्य में बाधा नहीं, उसके हमराही बनोगे
उसकी असफलताओं में भी उसका हाथ थामकर रखोगे।

और कहोगे उसे तुम के तुम चिंता मत करो,
हूँ मैं तुम्हारे साथ, घर के काम मिल बाँट कर करेंगे, जीवन के हर क्षेत्र में
हम दीया और बाती बनेंगे।

सुनो मैं तुम्हारा ख्याल रखा करूँगा, जब तुम बीमार पड़ोगी,
रात भर जाग कर तुम्हारी खबर रखूँगा,
सुनो, मेरी जीवन संगिनी मैं तुम्हारा हमसफर बनूँगा।



मैंने रईसी देखी है

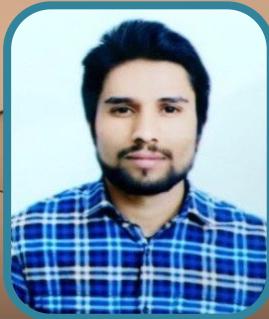
मैंने मेरी जिल्द लगी किताबों को माँ का शृंगार बनते देखा है,
घंटो रसोई में खड़े रह बनाए गए टिफिन को माँ का बलिदान बनते देखा है।

मेरी यूनीफॉर्म को पापा का औजार बनते देखा है,
खेतों में आए उनके पसीने को उनका बदन ढकते देखा है।

पक कर आई फसल को पापा का सुकून बनते देखा है,
मेरे कक्षा में अव्वल आने को, उनका इनाम बनते देखा है।

मेरी खुशी को उनका सारा संसार बनते देखा है,
मैंने मेरे माँ पापा को रईस बनते देखा है।





समीर आसिफ
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत : एक विश्वगुरु

तिरस्कार की धरती पर एकांत में,
विश्वगुरु बनने की इच्छा लिए,
इस गहरे सन्नाटे में आत्म-सम्मान के बोझ तले,
क्या पाने की चाह रखते हो।

द्रोणाचार्य की शिक्षा नहीं,
ना एकलव्य सा समर्पण,
ना अर्जुन सा ज्ञान,
ना कृष्ण की सीख है,
इस कुरुक्षेत्र के विजेता नहीं,
घायल हुए सैनिक हो तुम।

पर परीक्षा की इस घड़ी में,
आत्म-बल-सा खड़ा साहस तुम्हारा,
चक्रव्यूह भेदने का सार लिये है,
सुभद्रा की कोख से जन्मे साहस का सम्मान लिए है,
धर्म की आशा का कंधों पे अभिमान लिए है।

ये भव सागर का संग्राम नहीं,
उन्माद रूपी रावण से है युद्ध तुम्हारा,
लंका के असुरों से बढ़ के,
आधुनिकता का क्षुध है सारा।

किंतु किंचित भी ये हार नहीं तुम्हारी,
आदर्शों के सम्मान में है विजय तुम्हारी।

निश्चय ही

रामसेतू सा पथ तुम्हारे हृदय में हो,
सीता सी पवित्रता तुम्हारे चित्त में हो,
हो लक्ष्मण सा प्रेम मन में तुम्हारे,
भरत सा हो त्याग तुम्हारा।

वो खोया सम्मान पुनः पाओगे,
वसुधैव कुटुम्ब पुनः कहलाओगे

आत्मनिर्भर

राम भी तुम्हीं, तुम्हें न लक्ष्मणों का साथ हो,
एकलव्य भी तुम्हीं, तुम्हें न द्रोण का भी हाथ हो।

लंका से समुद्र पार विभीषण न कोई आएगा,
भेदने को चक्रव्यूह कोई अर्जुन न बतायेगा।

जामवंत के ज्ञान में, हनुमान का अभिमान हो,
कृष्ण गीता सार में, अर्जुन का सा ध्यान हो।

शकुनी की हर चाल में, जीवन भी होगा दाव में,
फिर ऊँची उड़ान भर तू, जटायु के घाव में।

अस्त्र-शस्त्र अब उठा, त्याग सुख तो क्षीण का,
तब उठा धनुष पुनः तू भेद नेत्र मीन का।

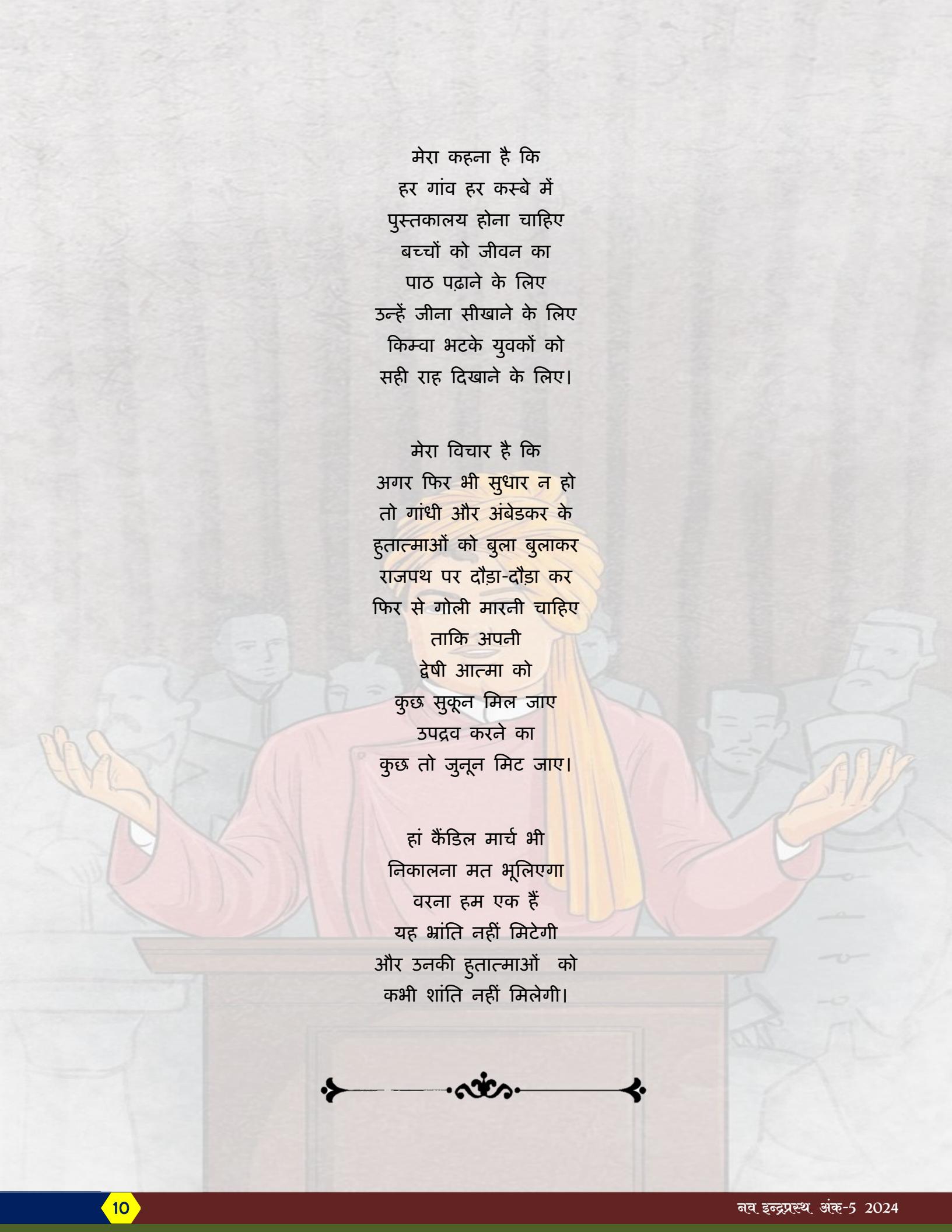


मेरा मानना है

मेरा मानना है कि
हर तरकश में
तीर की जगह
गुलाल होना चाहिए,
प्रेम की होली मनाने के लिए
द्वेष की टोकी जलाने के लिए।

मेरी सोच है कि
हमें होली दहन करनी चाहिए
सभी अनीतियों का
सामाजिक कुरीतियों का
जो समाज को बढ़ने नहीं देते
विकास की सीढ़ी चढ़ने नहीं देते।

मेरा विचार है कि
हमें जहर पिलाना चाहिए
सभी सामाजिक विडंबनाओं को
धर्म और जातीय परंपराओं को
ताकि फिर ऐसे
मनहूस विचार पैदा न हों
जो लोगों को फोड़ते हैं
देश और समाज को तोड़ते हैं।



मेरा कहना है कि
हर गांव हर कस्बे में
पुस्तकालय होना चाहिए
बच्चों को जीवन का
पाठ पढ़ाने के लिए
उन्हें जीना सीखाने के लिए
किम्बा भटके युवकों को
सही राह दिखाने के लिए।

मेरा विचार है कि
अगर फिर भी सुधार न हो
तो गांधी और अंबेडकर के
हुतात्माओं को बुला बुलाकर
राजपथ पर दौड़ा-दौड़ा कर
फिर से गोली मारनी चाहिए
ताकि अपनी
द्वेषी आत्मा को
कुछ सुकून मिल जाए
उपद्रव करने का
कुछ तो जुनून मिट जाए।

हाँ कैंडिल मार्च भी
निकालना मत भूलिएगा
वरना हम एक हैं
यह भ्रांति नहीं मिटेगी
और उनकी हुतात्माओं को
कभी शांति नहीं मिलेगी।





प्रिया शर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

"स्त्री" - अस्तित्व की पहचान

हम उस धरती से आते हैं, जहाँ धरती को माँ कहा जाता है,
"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" का नारा दिया जाता है,
जहाँ नारी का सम्मान हो, वहाँ देवता का वास माना जाता है,
जहाँ नारी के नारीत्व को कन्या रूप में पूजा जाता है,
जहाँ नारी के शक्ति रूप को दुर्गा कहा जाता है,
जहाँ माँ के आशीर्वाद को भगवान के आशीर्वाद से ऊपर रखा जाता है,
जहाँ नारी को लक्ष्मी का रूप माना जाता है,
जहाँ उसे जननी और जीवन का आधार समझा जाता है,
जहाँ नारी को पहला स्थान दिया जाता है,
जहाँ गौरी-शंकर और सिया-राम कहा जाता है।

फिर क्यों समाज की शंकाओं ने उसके पंखों को जकड़ा है,
समाज की उम्मीदों से उसके व्यक्तित्व को परखा है,
क्यों इस पितृ-सत्तात्मक समाज ने नारी को नर से कम समझा है,
क्यों उसने अपने सपनों को समाज की सोच पर निर्भर रखा है,
क्यों जीवन के हर मोड़ पर उसने अपने नारीत्व को एक कसौटी समझा है,
क्यों अबला शब्द नारी को चिह्नित करता है,
समय की रोशनी में वो तेज कब आएगा,
जो नारी को नारी होने का एहसास कराएगा,
कब उसे बराबरी का महत्व दिया जाएगा,
उसके अस्तित्व को उसके कर्तव्यों से अलग भी देखा जाएगा।





अनिल कुमार
कल्याण सहायक

परवरिश

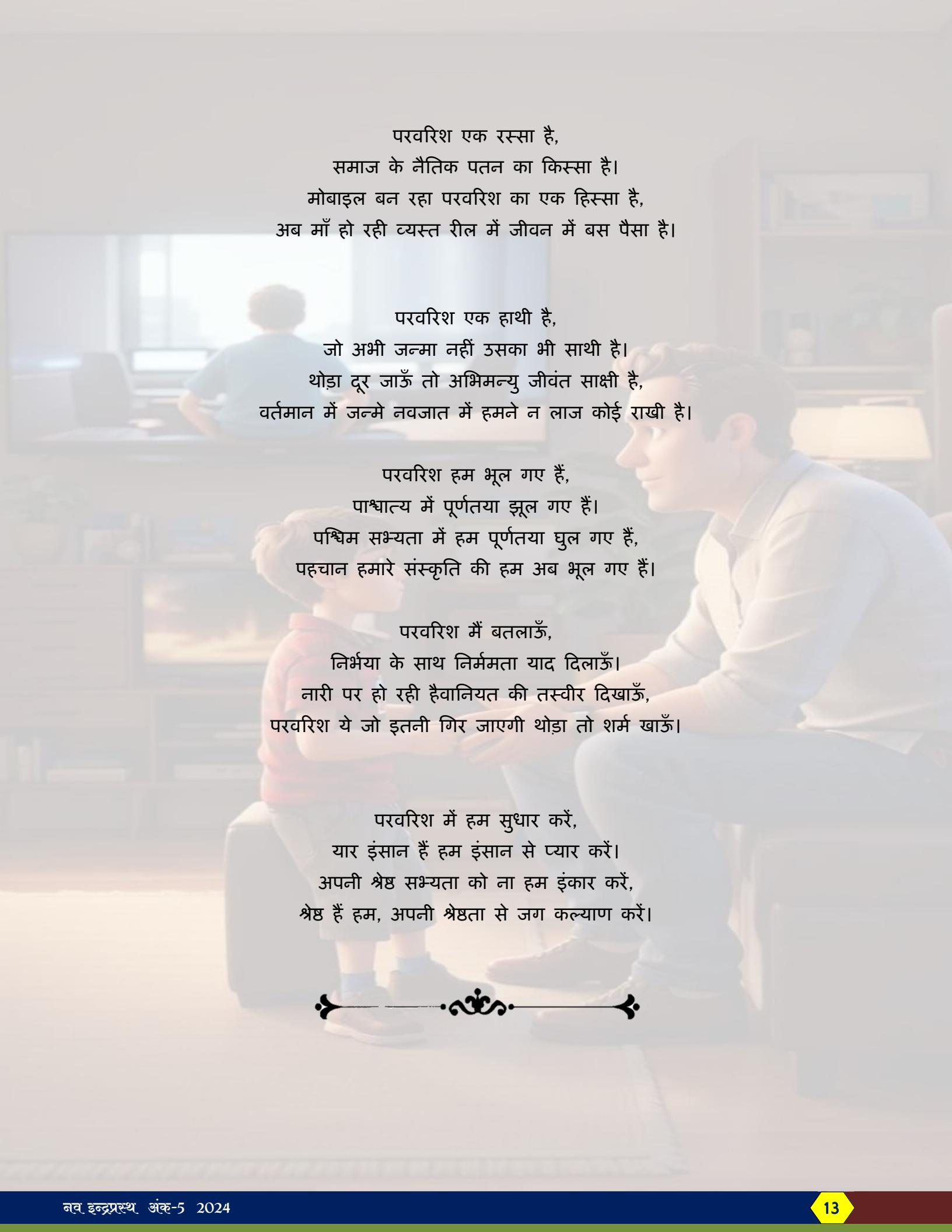
परवरिश एक शब्द है,
शब्द नहीं ये तो एक पूरा वाक्य है।
वाक्य नहीं, भाई वाक्यों का भी ये बाप है,
माटी को भी परिपक्व बनाता ऐसा ये ताप है।

परवरिश एक इतिहास है,
जीवन में ये शब्द बड़ा ही खास है।
यही तो हमारे पूर्वजों के आचरण का प्रकाश है,
हमारे जीवन रूपी नाव को सजाने का एक प्रयास है।

परवरिश एक बात है,
मंजिल पाने के लिए यही हाथ है।
ठगर सही पाने की एक मजबूत नाथ है,
परवरिश गर हो सही तो सफलता सबके साथ है।

परवरिश ढेरों जज्बातें हैं,
बाप दादाओं के मुक्के, घूसे और लातें हैं।
गर हुई कोई लापरवाही तो खूब झमाझम खाते हैं,
भई ये तो अपनी बातें हैं जो आज हम आपको बताते हैं।

परवरिश एक कथा है,
बदलते समाज की एक भयावह व्यथा है।
परवरिश हो रही गलत आज बदल रही हमारी प्रथा है,
बुजुर्ग रहें वृद्ध-आश्रम में ये एकल परिवार की सत्यता है।



परवरिश एक रस्सा है,
समाज के नैतिक पतन का किस्सा है।
मोबाइल बन रहा परवरिश का एक हिस्सा है,
अब माँ हो रही व्यस्त रील में जीवन में बस पैसा है।

परवरिश एक हाथी है,
जो अभी जन्मा नहीं उसका भी साथी है।
थोड़ा दूर जाऊँ तो अभिमन्यु जीवंत साक्षी है,
वर्तमान में जन्मे नवजात में हमने न लाज कोई राखी है।

परवरिश हम भूल गए हैं,
पाश्चात्य में पूर्णतया झूल गए हैं।
पश्चिम सभ्यता में हम पूर्णतया घुल गए हैं,
पहचान हमारे संस्कृति की हम अब भूल गए हैं।

परवरिश में बतलाऊँ,
निर्भया के साथ निर्ममता याद दिलाऊँ।
नारी पर हो रही हैवानियत की तस्वीर दिखाऊँ,
परवरिश ये जो इतनी गिर जाएगी थोड़ा तो शर्म खाऊँ।

परवरिश में हम सुधार करें,
यार इंसान हैं हम इंसान से प्यार करें।
अपनी श्रेष्ठ सभ्यता को ना हम इंकार करें,
श्रेष्ठ हैं हम, अपनी श्रेष्ठता से जग कल्याण करें।





मानवन्द्र झा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बजट

देशवासी अक्सर
मूल कारणों को
दरकिनार कर
हर वर्ष बेहतर
बजट की आस करते हैं,
कभी सत्ता पक्ष
तो कभी विपक्ष का
सहर्ष परिहास करते हैं।

सुरसा की भाँति
ये बढ़ती आबादी
औद्योगिक गुलामी
एवं कुटीर उद्योगों की
होती निरंतर बर्बादी,
उत्पादन होते हैं समांतर
मगर जनसंख्या वृद्धि
गुणोत्तर क्रम में होते हैं।

फिर हम बेरोजगारी का
अपनी लाचारी का
दैनांदिन रोना रोते हैं
आज जरूरत है कि
हमारा बजट सारे
विस्फोटक कारणों पर कान दे
बढ़ती आबादी और
घटते उद्योग पर ध्यान दे।

जख्म पर मरहम
लगाने से बेहतर है
कि कोई जख्म ही ना हो
भुखमरी पर रोने से
अच्छा है कि
भूखे रहने वाले ही कम हो।

बेरोजगारों को भत्ता,
किसानों को पैशन
ये तो ऊंट के मुँह में जीरा है
उनकी गरीबी, भुखमरी
और बेरोजगारी
समस्याओं का जखीरा है।

सवाल है कि उनकी सभी
मूल समस्याओं का
समूल नाश कैसे हो?
नियंत्रित आबादी,
औद्योगिक आजादी
शिक्षा और वैज्ञानिक कृषि
विकसित देशों जैसे हो।



गर्व हमें है हिंदी पर, शान हमारी हिंदी है
कहते-सुनते हिंदी हम, पहचान हमारी हिंदी है



पक्षी और वातावरण

सुबह कुछ टक-टक की
आवाज़ आ रही थी
दरवाज़ा खोलकर देखा
कोई दिखाई नहीं दिया.....
आवाज़ की दिशा में देखा
खिड़की पर एक पक्षी दिखाई दिया
अपनी चोंच से खिड़की पर
उकेर रहा था नक्काशी...
मैंने पूछा -
"भई क्या बात है"
बोला- क्या किराये पर मिलेगा
कोई पेड़, घोंसला बनाने के लिए?

अकेला तो कहीं भी रह लेता,
परंतु घर चाहिए, चूज़ों के लिए

तुम्हारे ही बंधुओं ने उजाड़ दिया है,
पूरा का पूरा जंगल,
नहीं छोड़ा है, हमारे लिए कोई बसेरा,
बेघर तो कर ही दिया है,
दाने-पानी के लिए भी तरसा दिया है

पुण्य कमाने के लिए रख देते हैं,
छत पर थोड़ा दाना, थोड़ा पानी,
पर सिर ढकने के लिए,

छत भी तो चाहिए
यह तो कोई सोचता ही नहीं

पेट तो भरना ही है,
भीख ही सही, थोड़ा खा-पी लेते हैं
थोड़ा बच्चों के लिए भी ले जाते हैं
भले ही सिर पर छत न हो,
पेट में भूख तो लगती है ना?

कभी-कभी सोचता हूँ
आत्मघात कर त्कूँ ,
बिजली के तारों पर बैठ जाऊँ,
या पटक दूँ सिर,
मोबाइल के ऊँचे टावर पर

जैसे सरकार दे देती है मकान,
फाँसी लगाने वाले इंसान को,
वैसे ही मिल जाएगा कोई पेड़
मेरे चूजों के घोंसले के लिए

सुनकर मैं सुन्न हो गया
इतना कुछ तो सोचा भी न था?
जंगल काटकर, घर उजाड़ दिए
इन बेचारों के, बिना विचारे

मैंने हाथ जोड़कर उससे कहा
सब की ओर से, मैं माफी माँगता हूँ
आत्मघात का विचार त्याग दो
यह दिल से विनय है मेरा आपसे

अभी तो इस गमले के पौधे पर
अपना वन रूम का घर बसा लो
थोड़ी अङ्गन तो होगी, परंतु
अभी इसी से काम चला लो

उसने कहा -
 "बड़ा उपकार होगा,
 परंतु किराया क्या होगा?
 और कैसे चुकाऊँगा "
 मैंने कहा-
 "तीनों पहर मंगल कलरव सुनुँगा
 और कुछ नहीं मांगूगा

वह बोला "मुझे तो आप मिल गए,
 पर मेरे भाई-बंधुओं का क्या?
 उन्हें भी तो घर चाहिए,
 कहाँ रहेंगे वो सब?"

मैंने कहा "अरे! अब लोग जाग रहे हैं,
 बड़, पीपल, नीम, गूलर लगा रहे हैं
 कोरोना ने झटका देकर,
 सबको डराया है,
 आपको आत्मघात करने की,
 अब आवश्यकता नहीं पड़ेगी"

सुनकर पक्षी उड़ गया,
 धोंसले का सामान लाने के लिए
 और मैंने मोबाइल उठाया
 आपको यह बताने के लिए
 पक्षी की टक-टक से,
 मेरे मन का द्वार खुल गया
 आप भी एक पेड़ तो लगाओगे
 अपने लिए या अपनों के लिए
 कहीं सार्वजनिक स्थानों
 या फिर आंगन में या फिर
 किसी के दिल में ही सही....





रितेश कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

नवयुवकों में बॉडी बिल्डिंग का बढ़ता क्रेज़: एक नई जीवनशैली

भारत में बॉडी बिल्डिंग की दीवानगी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। फिटनेस और बॉडी बिल्डिंग ने भारतीय युवाओं के बीच एक महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। यह केवल एक शारीरिक अभ्यास नहीं रह गया है बल्कि एक जीवनशैली बन चुकी है। आइए जानते हैं कि भारतीय युवाओं में बॉडी बिल्डिंग का यह क्रेज़ क्यों और कैसे बढ़ रहा है।

सोशल मीडिया और सेलिब्रिटी का प्रभाव

सोशल मीडिया का बढ़ता प्रभाव बॉडी बिल्डिंग के प्रति युवाओं की दिलचस्पी को बढ़ावा दे रहा है। इंस्टाग्राम, फेसबुक और यूट्यूब पर फिटनेस इंफ्लुएंसर्स और बॉडी बिल्डिंग प्रतियोगिताओं के वीडियो देखकर युवा प्रेरित होते हैं। बॉलीवुड सितारों और मशहूर खिलाड़ियों के सिक्स-पैक एब्स और टॉंड बॉडीज भी युवाओं को फिटनेस के प्रति आकर्षित कर रही हैं।

स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता

बढ़ती स्वास्थ्य समस्याओं और जीवन शैली से जुड़ी बीमारियों के कारण युवाओं में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ी है। नियमित व्यायाम और सही पोषण के महत्व को समझते हुए युवा बॉडी बिल्डिंग को अपनाने लगे हैं। यह न केवल शारीरिक स्वास्थ्य बल्कि मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद साबित हो रहा है।

जिम और फिटनेस सेंटरों की उपलब्धता

शहरों और कस्बों में जिम और फिटनेस सेंटरों की संख्या में वृद्धि हुई है। यह सुविधा युवाओं को आसानी से उपलब्ध हो रही है जिससे वे बॉडी बिल्डिंग की ओर आकर्षित हो रहे हैं। इन सेंटरों में प्रशिक्षित कोच और आधुनिक उपकरणों की उपलब्धता से युवाओं को बेहतर मार्गदर्शन और सुविधा मिल रही है।

प्रतियोगिताओं और पुरस्कारों का आकर्षण

बॉडी बिल्डिंग प्रतियोगिताओं में भाग लेकर नाम और पहचान बनाने का आकर्षण भी युवाओं को इस दिशा में प्रेरित कर रहा है। विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार जीतना और खुद को साबित करना एक बड़ा प्रेरणा स्रोत बन गया है।

मानसिक और आत्म विश्वास में वृद्धि

बॉडी बिल्डिंग न केवल शारीरिक रूप से बल्कि मानसिक रूप से भी आत्मविश्वास बढ़ाती है। नियमित व्यायाम और अच्छी शारीरिक बनावट से आत्म-संतुष्टि और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। यह युवाओं को जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है।

निष्कर्ष

भारतीय युवाओं में बॉडी बिल्डिंग का बढ़ता क्रेज एक सकारात्मक संकेत है। यह स्वस्थ और सक्रिय जीवन शैली को अपनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। हालाँकि, इसे सही मार्गदर्शन और संतुलित दृष्टिकोण के साथ अपनाना जरूरी है, ताकि इसका दीर्घकालिक लाभ प्राप्त किया जा सके। बॉडी बिल्डिंग को केवल एक शारीरिक अभ्यास के रूप में नहीं, बल्कि एक संपूर्ण जीवन शैली के रूप में अपनाना चाहिए।



शर्म नहीं, सम्मान है
हिंदी ही हमारा अभिमान है



हेमलता शर्मा
लेखापरीक्षक

व्यापार अवश्य करें किन्तु बुद्धि को व्यापारी ना बनाएं

जीवन निर्वाह के लिए कुछ न कुछ तो प्रवृत्ति अवश्य करनी होती है। जीवन का एक चौथाई हिस्सा पढ़ाई करनी पड़ती है ताकि कोई न कोई व्यापार, व्यवसाय करने योग्य बनें। जीवन के लगभग 30-40 वर्ष सीखे हुए ज्ञान कला-कौशल के अनुरूप प्रवृत्ति करने में खर्च होते हैं। प्रतिदिन 8 घंटे तो धंधा व्यवसाय करने में खर्च होते हैं। हमारा जीवन व्यापार करने में ओत-प्रोत हो जाता है। जागते, सोते, संकल्प में, स्वप्न में दुकान, माल, सामान, ग्राहक, कर्मचारी, इनकम टैक्स आदि धूमते रहते हैं। सारे दिन के धंधे से नफा हुआ या घाटा हुआ, रोज रात को यह हिसाब रखना होता है। यह ध्यान रखना होता है कि बिलकुल सही हिसाब रहे, नुकसान न हो।

धीरे व्यापार हमारी बुद्धि पर ऐसा सवार हो जाता है कि जीवन के अन्य सभी पहलू गौण हो जाते हैं। जीवन में आत्म कल्याण, शारीरिक स्वास्थ्य, पारिवारिक संबंध ये सब भी महत्वपूर्ण हैं और उसके लिए बुद्धि की शुद्धि और संतुलन बहुत जरूरी है लेकिन जब बुद्धि व्यापारी बन जाती है तो हर बात में आर्थिक लाभ को ही देखती रहती है। उसी सीमित दृष्टिकोण से हम व्यवहार करते रहते हैं। कई बार कई लोग हमें मिलने आते हैं, कुशल व्यवहार पूछने आते हैं लेकिन हमारी बुद्धि में व्यापार धंधे की बातें भरी रहती हैं, तो हम पूछते हैं कि बताये किसलिए आना हुआ? क्या काम काज है? वे कहते हैं, “हम तो ऐसे ही आए हैं, इधर से निकले तो सोचा की चलो आपसे मिल लेते हैं।” फिर हम होश में आते हैं और प्यार से मिलते हैं तो यह है हमारी बुद्धि पर कारोबार का असर।

दुकान पर बैठे भी तो ऐसा होता है। यदि कोई कहता है, “बताइए क्या चाहिए?” वह कहते कि “कुछ चाहिए नहीं, आपको दुकान पर बैठे देखा तो मिलने चले आ गए”। हर बार आर्थिक हिसाब, नकद भुगतान की बातें नहीं होती, जीवन में संबंधों का भी महत्व है और प्यार से मिलना भी जरूरी होता है।

हर संबंध को हिसाब की दृष्टि से देखने लगते हैं तो सोचते हैं, इस व्यक्ति से क्या प्राप्ति होगी? अगर कोई आर्थिक प्राप्ति नहीं होती तो उसको महत्व नहीं देते। हमारे संबंधों में भी स्वार्थ, मतलब आ जाता है। वास्तव में तो जीवन में कुछ मानवता के हिसाब से भी चलना होता है।

कोरोना काल में दुकान, फैक्ट्रियां बंद रहे। काफी श्रमिकों-कर्मचारियों को निकाल दिया गया परंतु जिन्होंने मानवता की दृष्टि से उनके खाने-पीने, रहने, जीवन जीने का प्रबंध किया तो उन्हें आज श्रमिकों - कर्मचारियों की कोई प्रॉब्लम नहीं हुई। उदारता और मानवता भी जीवन में होनी चाहिए। हमें व्यापार करना है परंतु जीवन को व्यापारी बुद्धि से नहीं जीना है। धन, साधन, संपत्ति से भी अधिक मूल्यवान हमारा मानव जीवन है लेकिन व्यापारी बुद्धि हो जाने के कारण हमारा हर काम सकाम अर्थ प्रधान, नफाखोर हो जाता है। ऐसे कर्म हमें सच्चा आनंद नहीं देते। भोगने के बजाय बांटने में आनंद, शांति और आंतरिक सुख मिलता है। निष्काम कर्म करने वालों में कोई दंभ, स्वार्थ, मतलब, आड़बर नहीं होता है। हमें हर बार हिसाब से नहीं देना होता, अपनी तरफ से थोड़ा अधिक देना होता है। इसने हमारे घर के प्रसंग के समय में इतना दिया था तो हम भी उतना ही करेंगे। यह हिसाब लगाते रहना, गिनती करते रहना- ऐसी बुद्धि नहीं होनी चाहिए, ऐसी सोच ठीक नहीं है।

हमें उपर्युक्त विषय में मनन करना चाहिए कि हमें भले ही व्यापार करना पड़ता है किंतु जीवन को व्यापारी बुद्धि से नहीं जीना है तभी हम व्यापार और मानव जीवन के सही कीर्तिमान स्थापित कर सकते हैं। अपने पारिवारिक संबंधों में प्रेम और प्रेरणा स्थापित कर सकते हैं।



सरकारी कामकाज हिंदी में करना
कोई बहुत मुश्किल काम नहीं है।

आप शुरू तो किजिए धीरे-धीरे
आपको लगने लगेगा ये तो बहुत ही
आसान है।



रितेश कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

बच्चों के लिए समर कैंप का महत्व

समर कैंप बच्चों के लिए न केवल एक मनोरंजक अनुभव होता है बल्कि यह उनके संपूर्ण विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गर्मियों की छुट्टियों में जब स्कूल बंद होते हैं तब बच्चों के पास अपने कौशल को विकसित करने और नए अनुभव प्राप्त करने का सुनहरा अवसर होता है। आइए जानते हैं समर कैंप के कुछ प्रमुख फायदों के बारे में।

सामाजिक कौशल का विकास

समर कैंप में बच्चे विभिन्न पृष्ठभूमि और संस्कृति के बच्चों से मिलते हैं। यह उन्हें नए दोस्त बनाने, विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने और टीम वर्क की भावना को विकसित करने में मदद करता है। समूह गतिविधियों के माध्यम से वे सामूहिक निर्णय लेने और सहयोग करने के महत्व को समझते हैं।

आत्म निर्भरता और आत्मविश्वास

समर कैंप बच्चों को आत्म निर्भर बनने के लिए प्रेरित करता है। माता-पिता से दूर रहकर, बच्चों को अपने कार्य स्वयं करने का मौका मिलता है। यह अनुभव उनके आत्मविश्वास को बढ़ाता है और उन्हें जिम्मेदारी का अहसास कराता है।

शारीरिक विकास

समर कैंप में विभिन्न प्रकार की खेलकूद और आउटडोर गतिविधियाँ होती हैं। ये गतिविधियाँ बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य को सुधारती हैं। नियमित व्यायाम और खेलों के माध्यम से बच्चे स्वस्थ और सक्रिय रहते हैं। इसके अलावा, प्रकृति के निकट रहकर वे प्राकृतिक वातावरण का आनंद भी लेते हैं।

नई चीजें सीखने का मौका

समर कैंप में बच्चे विभिन्न प्रकार की नई चीजें सीखते हैं, जैसे तैराकी, पेंटिंग, नृत्य, संगीत, थिएटर, हस्तशिल्प आदि। ये नए कौशल न केवल उनके रचनात्मकता को बढ़ाते हैं, बल्कि उनके व्यक्तित्व को भी समृद्ध करते हैं। नए कौशल सीखने से उनकी सोचने की क्षमता और समस्या-समाधान के कौशल में भी सुधार होता है।

मानसिक स्वास्थ्य में सुधार

समर कैंप बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद होता है। प्रकृति के बीच समय बिताने, नए दोस्तों के साथ खेल-खेलने और विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने से बच्चों का तनाव कम होता है और वे मानसिक रूप से ताजगी महसूस करते हैं। यह उनके मानसिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

डिजिटल डिटॉक्स

आजकल बच्चे ज्यादातर समय स्क्रीन के सामने बिताते हैं, जो उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। समर कैंप उन्हें डिजिटल डिटॉक्स का मौका देता है, जहाँ वे तकनीकी उपकरणों से दूर रहकर प्रकृति और वास्तविक दुनिया के साथ जुड़ते हैं।

नेतृत्व कौशल का विकास

समर कैंप में विभिन्न गतिविधियों और परियोजनाओं के माध्यम से बच्चों में नेतृत्व कौशल का विकास होता है। उन्हें समूह का नेतृत्व करने, निर्णय लेने और दूसरों को प्रेरित करने का मौका मिलता है। यह अनुभव उनके भविष्य के जीवन में भी काम आता है।

निष्कर्ष

समर कैंप बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह उन्हें न केवल मनोरंजन और मस्ती का मौका देता है बल्कि उन्हें जीवन के महत्वपूर्ण कौशल भी सिखाता है। बच्चों के लिए समर कैंप का अनुभव यादगार होता है और यह उनके व्यक्तित्व को निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों को समर कैंप में भाग लेने के लिए प्रेरित करें ताकि वे जीवन के इन महत्वपूर्ण अनुभवों का लाभ उठा सकें।





शुभम शर्मा
लेखापरीक्षक

क्या यह संसार असत्य है?

यह बात है लगभग 300 से 400 साल पहले की जब मथुरा के पास गांव में एक ब्राह्मण दंपति रहा करते थे। वे ब्राह्मण बहुत ही तेजवान् सर्वगुण संपन्न वेद पाठी कर्म-कांडी थे। उनकी पत्नी भी सुशीला थी। जब उनके संतानों का विवाह हो गया तो उन्होंने सोचा कि वह वृन्दावन में जाकर एक मकान खरीद कर भगवान का भजन करेंगे। अपने गृहस्थ दायित्वों को संपन्न कर वे अपनी पत्नी के साथ वृन्दावन में रहने लगे। तब उनका मन हुआ कि 108 बार श्रीमद्भागवत-महापुराण का पाठ करें। इस संकल्प के साथ उन्होंने पाठ आरंभ कर दिया। धीरे-धीरे समय बीतता गया एक बार पाठ करने में 7 दिन का समय लगता है। धीरे-धीरे 107 बार कथा संपन्न हो गई। परंतु अंतिम कथा का समय आया तो उन्होंने भगवान् कृष्ण से एक प्रार्थना की जैसे भगवान् बालकृष्ण ने मार्कडेय ऋषि को अपने उदर में अनंत ब्रह्मांडों का दर्शन कराया था तो उसे ब्राह्मण ने भी भगवान से प्रार्थना की कि उसे भी भगवान अपनी माया का दर्शन कराएं।

इस प्रकार अंतिम कथा भी संपूर्ण हुई और इस संकल्प को पूरा करने के अगले दिन ब्राह्मण अपनी पत्नी से बोले कि वह यमुना तट के निकट संध्या वंदन करने जा रहे हैं। आज वह भोजन में खिचड़ी खाएंगे। यह कहकर वह अपनी संध्या वंदन करने के लिए चले गए। जैसे ही उन्होंने यमुनाजी में डुबकी लगाई और बाहर आए तो वह देखते हैं कि उनके सामने का दृश्य बदल गया है। वे किसी अन्य नदी के कोई घाट पर खड़े हैं। वह अचरज में पड़ जाते हैं। अपनी संध्या वंदन पूर्ण करके जब वह आसपास के लोगों से पूछते हैं कि यह कौन सा स्थान है तो उन्हें जानकर आश्चर्य हुआ जब वहाँ के लोगों ने कहा कि आप काशी में हैं और इस घाट का नाम हरिश्चंद्र घाट है। उस ब्राह्मण को कुछ समझ नहीं आ रहा था और वह सोच में पड़ गए की पुरी से काशी अचानक कैसे पहुंच गए? इसी को सोचते सोचते वह घाट पर शाम तक बैठे रहे फिर उनकी भैंट वहीं पर रहने वाले एक वृद्ध ब्राह्मण से होती है जो उन्हें अपने साथ अपने घर ले चलता है। वह वृद्ध ब्राह्मण वहाँ पर संस्कृत के आचार्य थे और उनके पाठशाला में दूर-दूर से लोग संस्कृत तथा वेदों का अध्ययन करने के लिए आते थे। तो वृन्दावन से आए हुए ब्राह्मण ने सोचा कि क्यों ना एक बार फिर से वेदों का अध्ययन और संस्कृत भाषा पर पकड़ जमा ली जाए।

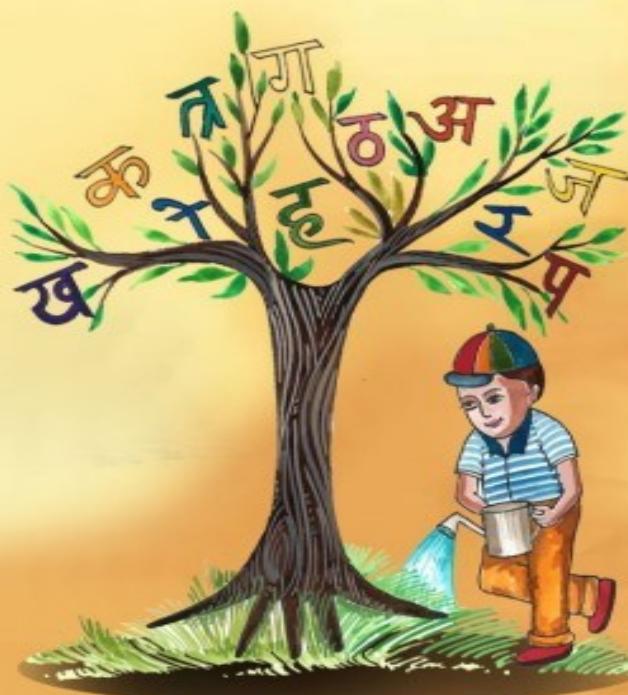
यह सोचकर उन्होंने भी उसे पाठशाला में दाखिला ले लिया थीरे-थीरे उन्होंने फिर से संस्कृत सीखना शुरू कर दिया और समय के साथ ही उनका विवाह उस वृद्ध ब्राह्मण की पुत्री से हो गया। वृद्ध ब्राह्मण की मृत्यु हो जाने पर वहाँ का आचार्य भी उसे वृन्दावन से आए हुए ब्राह्मण को बना दिया गया और उन्हें वृद्ध ब्राह्मण की पुत्री से संताने उत्पन्न हुई उन संतानों का भी विवाह हो गया। एक दिन वृन्दावन से आए हुए ब्राह्मण ने अपनी पत्नी से कहा कि आज जरा खिचड़ी बना लीजिए मैं हरिश्चंद्र घाट पर संध्या वंदन करके आता हूँ। जैसे ही वह हरिश्चंद्र घाट पर पहुँचे, गंगा में डुबकी लगाई और बाहर आए तो देखा कि वह यमुना के तट पर खड़े हैं। यह देखकर वह आश्वर्यचकित रह गई और भागकर अपने पुराने घर पर आ गए। जैसे ही उनकी पत्नी ने देखा कि वह इतनी शीघ्र आए हैं तो उसने कहा कि क्या हुआ आज आप संध्या वंदन करके नहीं आए? अभी तो खिचड़ी बनाने के लिए जो पानी रखा था वह भी पूर्ण रूप से गर्म नहीं हुआ है।

उस ब्राह्मण ने सोचा यदि मैं अपनी पत्नी को बताऊंगा कि मैं काशी पहुँच गया था वहाँ पर मेरा विवाह हो गया, संतान उत्पन्न हुई और उन संतानों के विवाह भी हो गए तो यह मुझे पागल समझेगी। इसलिए उस ब्राह्मण ने फिर भगवान से प्रार्थना की तो भगवान ने स्वप्न में आकर उन्हें बताया कि आप मेरी माया देखना चाहते थे सो मैंने दिखा दी।



हिंदी

लिखें. पढ़ें. बोलें. गर्व करें.





हेमराज मीना
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ई-ऑफिस का परिचय

❖ ई-ऑफिस का उद्देश्य:

यह राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र (एन.आई.सी.) द्वारा प्रवर्तित है। इस एप्लीकेशन का मुख्य उद्देश्य शासकीय कार्यालयों में कागजी-कार्यों को समाप्त करने एवं शासकीय कार्यों को अधिक प्रभावी बनाने, कुशल ढंग से करने एवं कार्यों में पारदर्शिता लाना है। ई-ऑफिस का एक अभिन्न हिस्सा ई-फाईल भी है जिसका उद्देश्य आने वाले पत्राचारों की स्कैनिंग, डायरी और पथ-निर्धारण के साथ-साथ पत्राचार, नोटिंग, ड्राफिटिंग, रेफरेंसिंग, मसौदे, संलग्नकों आदि पर सक्षम प्राधिकारी का अनुमोदन प्राप्त करने एवं साथ ही पत्रों को जारी करने हेतु सभी कार्यालयों को कागज रहित कार्यालयों के रूप में सक्षम बनाना है।

❖ ई-ऑफिस की आवश्यकता:

सूचना प्रौद्योगिकी में पिछले दशक से क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं जिसने लोगों की जीवन-शैली ही बदल दी है। किसी भी प्रौद्योगिकी के नव-प्रवर्तन में पर्यावरण की प्रमुख भूमिका होती है, अतः पर्यावरण के नुकसानों को भी ध्यान में रखा जाना आवश्यक है। किसी भी सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठनों में पत्रावली/प्राप्तियों के रूप में दैनिक आधार पर व्यवहार में लाए जा रहे कागजों की संख्या हजारों/लाखों में होती है। इन कागजी दस्तावेजों के संचारण करने, मानवीय पद्धतियों से डायरिकृत करने, इनके रिकोर्ड रखने एवं इनकी सुरक्षा के लिए काफी समय, धनराशि की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त इन पर नजर रखना, इन्हें ट्रैक करना भी आसान नहीं होता है और इससे संगठन की दक्षता एवं उत्पादकता घट जाती है।

ई-ऑफिस का विकास और कार्यान्वयन उपर्युक्त सभी खामियों/त्रुटियों को दूर करने, संगठन की दक्षता में वृद्धि करने और उनके कार्यों में पारदर्शिता लाने की दिशा में एन.आई.सी. का एक महत्वपूर्ण कदम है जोकि पुराने समय से चली आ रही मानवीय पद्धतियों को डिजिटल वातावरण में ले जाती है।

❖ ई-ऑफिस मॉड्यूल्स (e-Office Modules)

ई-ऑफिस मॉड्यूल्स के विभिन्न खण्ड होते हैं जो एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं तथा किसी भी संगठन में प्राप्त होने वाले दस्तावेजों के सम्पूर्ण जीवन-चक्र के आधिकारिक कार्य-प्रवाह का प्रबंधन करते हैं। ई-फाईल, के.एम.एस., ई-मेल, एम.आई.एस. रिपोर्ट्स एवं टास्क अलोट आदि ई-ऑफिस पर मुख्य खण्ड हैं, जिनमें सबसे प्रमुख हैं ई-फाईल।

प्राप्तियों, पत्राचारियों, डिस्पैच, रिपोर्ट्स इत्यादि से मिलकर ई-फाईल एप्लीकेशन बनता है जिसके प्रत्येक खण्ड में विभिन्न लिंक होते हैं जो उपयोगकर्ता को ई-फाईल के विभिन्न खण्डों की कार्यक्षमताओं का सरलता से उपयोग करने में सहायता प्रदान करता है।

आईए हम यहाँ ई-फाईल के विभिन्न खण्डों एवं उनके उपयोग के बारे में सीखते हैं:

1. प्राप्तियां (Receipts)

प्राप्ति एक लिखित दस्तावेज होता है जिसका उपयोग सूचना/जानकारी को आदान-प्रदान करने के लिए किया जाता है। प्राप्ति के अन्तर्गत उपलब्ध लिंक निम्नवत उल्लेखित हैं:

• ब्राउज करके डायरी करें (Browse & Diaries)

1. **भौतिक (Physical)** - मॉड्यूल में स्कैन किए गए दस्तावेजों को अपलोड करना अनिवार्य नहीं है बल्कि प्राप्ति पत्राचार पर केवल नजर रखने के लिए इसमें डायरी किया जाता है।
2. **इलेक्ट्रॉनिक (Electronic)** - मॉड्यूल में स्कैन किए गए दस्तावेजों को अपलोड करना अनिवार्य है और पत्राचार को आगे फाईल में प्रस्तुत करने हेतु डायरीकृत किया जाता है। इलेक्ट्रॉनिक प्रकृति में किसी भी पत्राचार को डायरी करने के लिए सबसे पहले उसे पी.डी.एफ. फॉर्म में जोकि 20 एम.बी. से कम हो, अपलोड किया जाता है तदपश्चात डायरी का व्यौरा (Diary Details), संपर्क का व्यौरा (Contact Details), पता (Address), श्रेणी और विषय (Category & Subject) आदि कॉलमों में सूचना/आकड़े प्रविष्ट किये जाते हैं। अंत में डायरी बनाई (Generate) जाती है। इससे इस एप्लीकेशन द्वारा डायरीकृत प्राप्ति को एक यूनिक डायरी नं. दिया जाता है, जिसकी मदद से इसे कभी भी आसानी से ट्रैक किया जा सकता है।

- **इन बॉक्स (Inbox) –** इन बॉक्स विकल्प के अन्तर्गत आवक पत्राचार के रूप में प्राप्त सभी प्राप्तियों की सूची रहती है जिसमें से किसी भी प्राप्ति क्रमांक पर क्लिक करके उसकी विषयवस्तु तथा विवरण देखा जा सकता है। इसमें किसी भी प्राप्ति का चयन करने के पश्चात विभिन्न विकल्प मिलते हैं जैसे प्राप्ति (Received), फाईल में प्रस्तुत करें (Put in File), ले जाए (Move to), भेजे (Send), वापस भेजे (Send Back), कॉपी करें (Copy), बंद करें (Close), ढूँढे (Search Here) आदि।
- **बनाई गई आवती (Created) –** इस विकल्प में उन सभी प्राप्तियों की सूची रहती है जिन्हें उपयोगकर्ता द्वारा डायरीकृत किया गया हैं, किन्तु उन्हें आगे किसी को भेजा नहीं गया है। इसमें भी उपयोगकर्ता को इनबॉक्स की तरह ही विकल्प प्राप्त होते हैं जिनका प्रयोग वह अपनी सुविधानुसार कर सकता है।
- **भेजी गई आवती (Sent) –** इस विकल्प का उपयोग उपयोगकर्ता अपने द्वारा आगे भेजी गई प्राप्तियों पर अन्य वांछित जानकारी जानने हेतु कर सकता है।
- **संवाद की सूची (Initiated Actions) –** इसमें उपयोगकर्ता किसी भी समय अपने द्वारा किये गए संवाद/कार्यों की सूची निकाल सकता है।
- **पावती (Acknowledgement) –** इस विकल्प का उपयोग दस्तावेजों के प्रेषक को पावती भेजने हेतु किया जाता है।
- **बंद आवती (Closed) –** इस विकल्प में उपयोगकर्ता द्वारा बंद की गई सभी प्राप्तियों की सूची रहती है जिन्हें पुनः आवश्यकता पड़ने पर पुनः खोला (Re-open) जा सकता है।

2. फाईल (File)

ई-फाईल का सबसे महत्वपूर्ण खण्ड फाईल खण्ड (File Section) है, जिसमें सभी तरह के पत्राचार से संबंधित टिप्पणी, आलेख, सन्दर्भ और संबंध पत्रावलियाँ पर कार्य किया जाता है।

प्राप्ति के अन्तर्गत उपलब्ध लिंक निम्नवत उल्लेखित हैं:

नई/पार्ट/वॉल्यूम फाईल बनाएं (Created New/Part/Volume File) – नई फाईल खोलते समय विभिन्न विकल्प जैसे इलेक्ट्रॉनिक या भौतिक प्रकृति, एस.एफ.एस. या गैर एस.एफ.एस. टाईप, विषय, भाषा, श्रेणी, पिछला/बाट का संदर्भ आदि का उपयोग किया जाता है। एस.एफ.एस. में फाईल का नाम उपयोगकर्ता द्वारा चुना जा सकता है जबकि गैर एस.एफ.एस. में दिए गए ऑप्सनों का चयन करते हुए ही चुनना होता है। एक बार फाईल बनाने के पश्चात फाईल नाम में कोई बदलाव नहीं किया जा सकता है जबकि फाईल का विषय आवश्यकतानुसार बदला जा सकता है।

The screenshot shows a software interface for the Office of Comptroller and Auditor General of India (CAG). At the top, there are buttons for 'Nature' (Electronic or Physical) and 'Type' (NON SFS or SFS). The 'Nature' is set to 'Electronic' and 'Type' is set to 'SFS'. The main title is 'GOVERNMENT OF INDIA' and 'Office of Comptroller and Auditor General of India (CAG)'. Below this, it says 'PD (Audit)-ESM' and 'Internal Audit (ICA)'. The 'Nature' is listed as 'Electronic' and 'Type' as 'SFS'. The form has sections for 'File No.' (Subject), 'Description' (Description), 'Main Category' (Choose One) and 'Sub Category' (Choose One), 'Remarks' (Remarks), 'Previous References', 'Later References', and 'Language' (Hindi). A 'Continue Working' button is at the bottom.

- इनबॉक्स (Inbox) – इनबॉक्स लिंक के अन्तर्गत उन समस्त पत्रावलियों/ई-फाईलों की सूची निहित होती है जोकि या तो स्वयं उपयोगकर्ता द्वारा नई फाईल बनाई गई है या उसे किसी अन्य ई-ऑफिस उपयोगकर्ता से प्राप्त हुई है। इनबॉक्स में किसी भी फाईल

क्रमाक पर क्लिक करके उसकी विषय वस्तु तथा विवरण देखा जा सकता है। इसमें किसी भी फाईल का चयन करने के पश्चात विभिन्न विकल्प मिलते हैं जैसे संचलन (Movement), व्यौरा (Detailed), मसौदा (Draft), संपादन करें (Edit), भेजे (Send), वापस भेजे (Send Back), लिंक फाईल देखे (Link File), संलग्न करें (Attach), पार्क करें (Park), बंद करें (Close) आदि।

ई-फाईल पर कार्य करने में उपयोग आने वाले मुख्य विकल्प निम्नलिखित हैं:

i) **टिप्पणी (Noting)** – ई-फाईल में नॉटिंग करते समय कई विकल्प मिलते हैं जैसे हरा पृष्ठ (Green Note) पर टिप्पणी जोड़े (उच्च अधिकारी को भेजने के पश्चात कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता है), पीला पृष्ठ (Yellow Note) पर टिप्पणी जोड़े (उच्च अधिकारी द्वारा संपादन किया जा सकता है), सहेजे, हटाएं आदि।

ii) **पत्राचार (Correspondence)** – इस साइड पर विभिन्न विकल्प मौजूद होते हैं जैसे इनबॉक्स में मौजूद आवती जिन्हें पत्राचार से जोड़े (Add Receipt under TOC), पिछली टिप्पणियाँ (Previous Note), मसौदों की सूची (Draft List), मसौदा दस्तावेज (Draft Documents), संदर्भ (Reference), मार्गेटड नोट्स (Migrated Notes), प्रिंट (Print) आदि।

iii) **मसौदा (Draft)** – इस विकल्प का उपयोग नया मसौदा बनाने या पुराने मसौदे को देखने के लिए किया जाता है। नये मसौदे बनाने के लिए नये मसौदा बनाए विकल्प पर क्लिक करके मसौदा अपलोड/पेस्ट करना होता है, इसके पश्चात आवश्यक वांछित सूचनाएं भर जाती हैं जैसे मसौदे की प्रकृति, आवती सं., भाषा, केटेगरी, विषय, प्राप्तकर्ता का नाम एवं पता आदि। एक बार बनाए गए मसौदे को दोबारा से संपादन (Edit) या हटाया (Remove) जा सकता है।

- **भेजी गई फाईल (Sent)** – यह विकल्प उपयोगकर्ता को कोई विशेष पत्रावलियाँ/फाईलों को प्रेषित करने में सहायता प्रदान करता है।
- **पार्क की गई फाईल (Parked)** - यह विकल्प उपयोगकर्ता को कोई विशेष पत्रावलियाँ/फाईलों जिन पर भविष्य में कार्य किया जाना है, को एक निश्चित तिथि तक पार्क करने की सुविधा प्रदान करता है।
- **बंद की गई फाईल (Closed)** - यह विकल्प उपयोगकर्ता को किसी फाईल जिस पर आगे कोई कार्य नहीं किया जाना है या उसी विषय से संबंधित अन्य नई फाईल खोल ली गई हो, को बंद करने में सुविधा प्रदान करता है।

3. निर्गम (Issue/Dispatch) – यह खण्ड उपयोगकर्ता को उन पत्राचारों/मसौदे के अवलोकन की सुविधा देता है, जोकि उसके द्वारा संबंधित प्राप्तकर्ताओं को भेजे गए है।

निर्गम के अंतर्गत उपलब्ध लिंक निम्नवत उल्लेखित हैं:

- **भेजी गई (Issued)** – इस विकल्प में भेजे गई आलेखों/मसौदों की सूची निहित होती है। इस सूची में मौजूद निर्गम संख्या पर क्लिक करके किसी भी जारी आलेख के संबंध में संपूर्ण व्यौरा/जानकारी प्राप्त की जा सकती है। साथ ही यह विकल्प किसी निर्गम आलेख के संबंध में अनुस्मारक बनाने या देखने की सुविधा भी प्रदान करता है।
- **लौटाई गई (Returned)** – इसमें अन्य ई-ऑफिस उपयोगकर्ता को लौटाई गए पत्राचारों की सूची रहती है। इसमें कई विकल्प जैसे प्राप्त करने, पुनः प्रेषित करने, अनुस्मारक देखने आदि भी मौजूद होते हैं जिनका प्रयोग उपयोगकर्ता अपनी सुविधानुसार कर सकता है।
- **विस्तृत खोज (Advanced Search)** – इस विकल्प द्वारा निर्गम किए गए बहुत सारे पत्राचार में से किसी पत्राचार को खोजने के लिए कुछ संदर्भ देकर या फ़िल्टर लगाकर बहुत कम समय में उसे प्राप्त किया जा सकता है।

4. एम.आई.एस. रिपोर्ट्स (MIS Reports) – इस खण्ड में कुछ पूर्व-परिभाषित मापदण्डों तथा फ़िल्टरों पर आधारित कतिपय खोज/प्रयोगों का परिणाम दर्शाती है।

रिपोर्ट्स के अन्तर्गत उपलब्ध लिंक निम्नवत उल्लेखित हैं:

- **फाईल खण्ड (Files Section)** – इस खण्ड का उपयोग उपयोगकर्ता द्वारा फाईल रजिस्टर रिपोर्ट बनाने के लिए किया जाता है। इस खण्ड में उपयोगकर्ता व्यक्तिगत/पदानुक्रम/अनुभाग-वार (Individual/Hierarchy/Section-wise) एक पी.डी.एफ. रिपोर्ट्स उत्पन्न कर सकता है जिसमें मौलिक मर्दों और उप-मर्दों, फ़िल्टरों एवं कुछ मापदण्डों के आधार पर दो निर्दिष्ट तिथियों के मध्य बनाई गई सभी फाईलों की सूची होती है, जिसका उपयोग उपयोगकर्ता किसी अवधि विशेष में नई खोली गई फाईलों की संख्या, बंद की गई फाईलों की संख्या, पार्क की गई फाईलों की संख्या एवं आदान-प्रदान की गई फाईलों का सारांश जानने के लिए कर सकता है।

- प्राप्ति खण्ड (Receipt Section)** - इस खण्ड में उपयोगकर्ता व्यक्तिगत/पदानुक्रम/अनुभाग-वार (Individual/Hierarchy/Section-wise) एक पी.डी.एफ. रिपोर्ट्स उत्पन्न कर सकता है जिसमें फिल्टरों एवं कुछ मानदंडों के आधार पर दो निर्दिष्ट तिथियों के मध्य आदान-प्रदान की गई सभी प्राप्तियों की सूची होती है। इसमें सभी प्राप्तियों को उनकी प्रकृति, समय (मासिक/वार्षिक), केटेगरी, महत्वता, अनुभाग के सभी उपयोगकर्ता-वार भी वर्गीकृत कर सकते हैं। इससे प्राप्तियों के निस्तारण एवं वर्तमान स्थिति जानने में भी मदद मिलती है।
- निर्गम खण्ड (Dispatch Section)** - इसका चयन करके एक पी.डी.एफ. रिपोर्ट्स उत्पन्न कर सकते हैं जिसमें उपयोगकर्ता उसके या उसके अनुभाग द्वारा समस्त प्रेषण की सूची निर्गम क्रमांकानुसार देख सकता है।

•ॐ•

डॉ.राजेन्द्र प्रसाद

•••

“जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता。”



ऋषिकेश और हरिद्वार की यात्रा: एक अद्भुत और रोमांचकारी अनुभव

हाल ही में, मेरे पांच सहकर्मियों के साथ हमने ऋषिकेश और हरिद्वार की एक शानदार यात्रा की। यह यात्रा मित्रता, साहस और सुंदरता से औत-प्रोत थी, और हमारे दिलों में एक चिर-स्मरणीय याद के रूप में हमेशा के लिए। आइए इस यात्रा के हर पल का अनुभव साझा करते हैं।

यात्रा की शुरुआत

हमने अपने ऑफिस से इस यात्रा की शुरुआत की, और दिल्ली मेरठ एक्सप्रेस-वे से होते हुए फिर मेरठ से हरिद्वार NH-58 के राजमार्ग का रोमांच बहुत ही खास था। रास्ते में, जब हम मेरे गृहनगर मुजफ्फरनगर के पास से गुजरे, तो हमारी नजर एक शिकंजी विक्रेता पर पड़ी। उस विक्रेता को मैं बचपन से जनता था। मैंने अपने दोस्तों को इस खास शिकंजी का स्वाद चखने का प्रस्ताव रखा। ठंडी और ताजगी से भरी शिकंजी ने हम सभी को तरोताजा कर दिया। यह ठंडी राहत एक शानदार शुरुआत थी जिसने हमें पूरी यात्रा के लिए ऊर्जा प्रदान की। इसके बाद रास्ते में खाते पीते, गप्पे मारते हुए हम लोग आगे बढ़े तभी रास्ते मुझे ड्राइव करते हुए एक भगत जी नाम का मिष्ठान भंडार दिखा। मुझे पहले से पता था कि यहाँ की बालूशाही बहुत मशहूर है। फिर क्या था, मैंने गाड़ी रोकी और सभी को यहाँ की यह प्रसिद्ध मिठाई चखने के बारे में बोला। सभी ने बालूशाही खायी और सबको पसंद भी आयी। फिर सभी मस्ती करते हुए ऋषिकेश तक पहुँच गए।

ऋषिकेश में प्रवेश

लंबी ड्राइव के दौरान हम राजाजी राष्ट्रीय उद्यान में से गुजरते हुये जा रहे थे। जहाँ रास्ते में हाथियों से सावधान के संकेतक देखकर रात के समय के कारण हम सभी भय के साथ उत्साह के सम्मलित भाव से औत-प्रोत थे।



रात तकरीबन 10 बजे के आसपास ऋषिकेश पहुंचे। थकावट और भूख के कारण, हमारी पहली प्राथमिकता थी एक अच्छा खाना। हमने “रसौई ढाबा” पर रुककर स्वादिष्ट खाना खाया। ढाबे की मसालेदार और लजीज़ दाल, ताज़ी रोटियाँ, और पनीर की सब्ज़ी ने हमारे मन को पूरी तरह से संतुष्ट कर दिया। इसके बाद हम अपने होटल की ओर बढ़े।



होटल में पहुंचते ही, यहाँ के माहौल और एम्बियंस (वातावरण) ने सभी को बहुत प्रभावित किया। आरामदायक बिस्तर, साफ-सुथरी सुविधाएं, और मित्रवत स्टाफ ने हमारी थकान को दूर कर दिया। होटल की सबसे खुबसूरत बात वहाँ का कैफ़े और बैठक व्यवस्था थी। वह दो घंटे हमने बैठकर बाते की और माहोल का आनंद लिया। रात को, हम सभी ने होटल के आम क्षेत्रों में बैठकर गप्पे मारीं और अगले दिन की योजनाओं पर चर्चा की।

रिवर राफिटिंग का रोमांच

अगली सुबह, हम सभी ने उत्सुकता के साथ रिवर राफिटिंग के बारे में जानकारी प्राप्त की। हमारे एक साथी रविंदर को रिवर राफिटिंग का पहले से अनुभव था। रविंदर का सुझाव था कि हमें 32 किलोमीटर की राफिटिंग करनी चाहिए। हालांकि, सप्ताहांत के कारण राफिटिंग की कीमतें काफी बढ़ गई थीं एवं गंगा नदी की लहरों में ज्यादा उफान एवं पानी का स्तर बढ़ने के कारण प्रशासन ने 32 किमी की राफिटिंग पर उस दिन के लिए प्रतिबंध लगा दिया था। यह सुनकर सभी को काफी निराशा हुई, क्योंकि हम इस लंबे और रोमांचक राफिटिंग का काफी इंतजार कर रहे थे। लेकिन हमें 12 किमी की राफिटिंग का मौका मिला। हमारे राफिटिंग गॉड (मार्गदर्शक) का नाम “टाइगर जोशी” बहुत ही रोचक था। इसके बाद हम सभी साथी एक गाड़ी में बैठकर राफिटिंग के शुरुआती बिंदु तक जाने के लिए तैयार थे। हमारे साथ महाराष्ट्र से आये 4 अन्य साथी पहले से ही गाड़ी में बैठे थे।



ऋषिकेश में हमारे होटल से राफिटिंग के शुरुआती बिंदु तक जाने का रास्ता बहुत ही घुमावदार था। इसके एक तरफ गंगा की गहरी घाटी एवं दूसरी तरफ पहाड़ों की चोटियाँ थीं। रास्ता बहुत ही रमणीक था।

उसके पश्चात राफिंग के शुरुआती स्थान पर पहुँचकर मार्गदर्शक के कुछ अनुदेशों के पश्चात हमने राफिंग आरम्भ की और गंगा की तेज धारा और लहरों ने हमें पूरी तरह से उत्साहित कर दिया। मार्गदर्शक के आश्वस्त करने पर सभी ने अपने साहस को बटोर कर महादेव का नाम लेकर गंगा नदी में छलांग लगा दी। गंगा का तेज बहाव हमें अपने साथ बहा ले जा रहा था एवं गंगा का ठंडा पानी सर से पाँव तक कंपकपी छुड़ा देने वाला था। 12 किलोमीटर की राफिंग के पश्चात हम किनारे तक पहुँच गए। राफिंग के दौरान हर एक लहर, हर एक मोड़ ने हमें रोमांचित किया और हमारा मन प्रसन्न हो गया।

शानदार रिसॉर्ट का ठहराव

रीवर राफिंग के बाद हम मोहनचट्टी की वादियों में बसे हुए “जोस्टल प्लस” रिजोर्ट जो की रिवर राफिंग के साथ साथ हमारी यात्रा का एक महत्वपूर्ण आकर्षण था की ओर रवाना हुए। यात्रा के दौरान, हम एक लंबे ट्रैफिक जाम में फंस गए और हम सभी सोच रहे थे की मुख्य शहर से इतना दूर होटल लेकर हमने गलती तो नहीं कर दी हैं...,



लेकिन इसी दौरान रास्ते में हमें एक अद्भुत झरना देखने का मौका मिला। सुनियोजित पार्किंग व्यवस्था नहीं होने के कारण झरने को देखने के लिए हमे अपनी गाड़ी को रास्ते में ही किनारे पर रोकना पड़ा और झरने को देखने चले गए। झरने का ताजा पानी और उसकी सुंदरता ने हमारी थकान को भुला दिया। वापस आकर देखा तो हमारी गाड़ी का पार्किंग के कारण चालान कट चुका था। ये देख कर हम सब चालान के दुःख के बावजूद भी बहुत हसने लगे, हम सभी हँस क्यों रहे थे ये हम आज तक नहीं समझ पाए। शायद हम सभी अपनी बेवकूफी पर हँस रहे थे कि सभी कुछ जानते हुए भी गलत जगह पार्किंग लगा दी। परंतु ये सब तो बस अच्छे बुरे अनुभव हैं यात्रा के।



इसके बाद हम रिसॉर्ट के लिए निकल गए, जब हम रिसॉर्ट पहुँचे, तो हमें खुशी हुई कि यह वास्तव में शानदार था। रिसॉर्ट का वातावरण और अनुभूति ऐसी ही थी जैसी हमने रिसॉर्ट आरक्षित करते समय उम्मीद की थी। चारों तरफ की ॐ-ची-ॐ-ची पहाड़ियाँ, पहाड़ों के बीचे से बहते पानी की आवाज, चारों तरफ की हरियाली तथा शांत वातावरण ने भाग दौड़ भरी जिन्दगी में फिर से भाग दौड़ करने के लिए उर्जा भर दी।

स्विमिंग पूल, रिसॉर्ट की सबसे आकर्षक विशेषता थी। हम सभी- श्रीकान्त, नवीन, रविंदर, चेतन, और सुमीत - ने पूल में मस्ती की।

चेतन और सुमीत ने पूल में आनंद की एक नई दुनिया में प्रवेश किया। चेतन हमारे ग्रुप का सबसे उर्जावान साथी है। चेतन और नवीन के हंसी-मजाक का स्वभाव और खुशमिजाजी ने माहोल को खुशनुमा और खास बना दिया।



मजेदार शाम और अजीब परिस्थितियाँ

शाम को, मैं, चेतन और नवीन ने नजदीकी दुकान पर जाने का फैसला किया, कुछ स्नैक्स और आवश्यक सामान लाने के लिए। यह यात्रा एक छोटे से साहसिक कार्य की तरह थी। संकरा रास्ते में पहाड़ों में ऊपर की ओर चढ़ाई के दौरान, हमें गहरी घाटी और सुंदर पहाड़ों के दृश्य देखने को मिले। घाटी में ही एडवेंचर (साहसिक कार्य) के लिए बनाये गये बंजी जंपिंग के स्थान पर देखकर हम थोड़े डर गए, लेकिन यह भी एक अद्वितीय अनुभव था।

रास्ता बहुत ही फिसलन भरा था और ड्राइविंग काफी जोखिम भरी थी। हमें पता चला कि हमारी कार का ईंधन समाप्त होने वाला है और नजदीक के 30 किलोमीटर में कोई पेट्रोल पंप नहीं है। हमने कुछ दुकानों से पेट्रोल की खोज की और अंततः सौभाग्य से एक किराना दुकान से पेट्रोल मिल गया।



इसके बाद, हम रिसॉर्ट में लौटे। सप्ताहांत होने के कारण वहाँ और भी अन्य लोग आये हुए थे। मनमोहक लाइटिंग, इनडोर गेम क्षेत्र तथा संगीत में झबकर लोग अपने-अपने तरीके से अपने-अपने स्तर उस रात को और भी रंगीन बना कर आनंद ले रहे थे। इस प्रकार शाम का माहौल इतना सुंदर था कि शब्दों में नहीं कहा जा सकता। हमने एक साथ बैठकर गप्पे मारीं और स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया।



सुबह की गतिविधियाँ और लक्ष्मण झुला

अगली सुबह, हमने पास के इलाके में एक छोटे से ट्रैक का आनंद लिया। मौसम की ठंडक और सुंदर परिवेश ने हमें ताजगी और शांति का अनुभव कराया।

इसके बाद, हम लक्ष्मण झुले की ओर रिवर राफिटिंग के लिए बढ़े और इस बार हमें 32 किमी लंबी राफिटिंग का मौका मिला। वहाँ हमे एक बहुत ही शानदार मार्गदर्शक मिला।

लेकिन यहाँ हमे एक बड़ी ही अजीब सी स्थिति देखने को मिली जब हमारे ग्रुप का सबसे साहसिक एवं ऊर्जावान साथी राफिटिंग से डर गया। उसे बहुत मुश्किल से हमने राफिटिंग के मनाया और अंततः वो हमारे साथ चलने को तैयार हो गया। हम गाड़ी में बैठकर राफिटिंग के लिए जा ही रहे थे तो रास्ते में देखा की गंगा में बहुत ऊँची लहरे हो रही हैं। थोड़ा आगे बढ़े तो देखा की गंगा में एक राफ्ट उल्टी हो गयी है और उसके सभी सदस्य गंगा में बहुत तेजी से बह रहे थे। ये सब देखकर हम सभी को थोड़ा डर लगने लगा और सबसे ज्यादा डर उस साथी को लगा क्योंकि उसको मुश्किल से हम साथ लाये थे अब तो वो राफिटिंग के लिए बिल्कुल मना करने लगा। खैर हम अपनी राफिटिंग शुरू होने वाले स्थान पर पहुँचे और गंगा की ऊँची लहरों को देखकर हम थोड़े ओर डरे हुए थे लेकिन हमारा गाइड बहुत ही शांत और अनुभवी था। थोड़ी प्रेरणा के पश्चात हम सभी राफिटिंग के लिए तैयार हो गए। सभी जब नाव (राफ्ट) में बैठने जा रहे थे तो देखा कि वह साथी कहीं दिखाई नहीं दे रहा है। बाद में पता लगा की वह तो डर के कारण वापस चला गया है।



उसके बाद हम सभी 4 लोगों ने राफिटिंग शुरू की। गंगा की ऊँची लहरे और तेज धार ने सभी को रोमांचित कर दिया। हमारे मार्गदर्शक ने हमें तेज लहरों में कूदने के लिए प्रोत्साहित किया और प्रेरित किया। थोड़ी हिचकिचाहट के बाद हमने सब ने नदी में छलांग लगाई। गंगा की तेज लहरों में तैरने का अनुभव बहुत ही शानदार था। यह अनुभव शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। उसके बाद लक्ष्मण झुले पर जाकर हमारी राफिटिंग समाप्त हुई और हमें ना चाहते हुए भी गंगा से बाहर आना पड़ा।

हरिद्वार की यात्रा

राफिंग के बाद, हम हरिद्वार की ओर बढ़े। ऋषिकेश से हरिद्वार की यात्रा हमने चिल्ला लेक वाले रास्ते से की। यह रास्ता बहुत ही मनमोहक और सुन्दर ठाट एक तरफ साफ पानी की नहर एवं दूसरी तरफ हरे भरे खेत खलियान। इस सुन्दर रास्ते का आनंद लेते हुए हम हरिद्वार पहुँच गए।

यहाँ हमने ‘हर की पौड़ी’ में स्नान किया और शाम की गंगा आरती का अद्भुत अनुभव किया। बाजार की सैर ने हमें यहाँ की संस्कृति का एक और पहलू देखने का मौका दिया। साथ ही वहाँ के बहुत तरह के पकवान का आनंद लिया। रात को, हमने दिल्ली की ओर वापसी की यात्रा शुरू की।



निष्कर्ष

इस यात्रा का हर पल अद्वितीय तथा अविस्मरणीय है। दोस्तों के साथ बिताया गया समय, रोमांचक राफिंग, खूबसूरत रिसॉर्ट, और हरिद्वार का धार्मिक अनुभव – सभी मिलकर यह यात्रा मेरे जीवन की बेहतरीन यात्राओं में से एक रही। यह यात्रा निश्चित ही मेरे दिल में हमेशा खास स्थान बनाएगी।



सुभाषचंद्र बोस

“प्रांतीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी,
उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं
मिल सकती।”





पहला सिनेमा अनुभव: राजमंदिर सिनेमा में "बेटा"

मुझे आज भी याद है, जब मैं पहली बार सिनेमा हॉल में फ़िल्म देखने गई थी। यह अनुभव मेरे जीवन का एक बेहद खास पल था जिसे मैंने अपने पति के साथ जयपुर के प्रसिद्ध राजमंदिर सिनेमा हॉल में बिताया। उस दिन की सुबह मेरे लिए सामान्य नहीं थी; आज मुझे अपने जीवन के पहले सिनेमा अनुभव के लिए बाहर जाना था। राजमंदिर सिनेमा हॉल का नाम सुनते ही मेरे दिल की धड़कनें तेज हो गई थीं। यह जयपुर के सबसे पुराने और सबसे भव्य सिनेमा हॉल में से एक था। जब हम वहां पहुंचे, तो उसकी भव्यता और ऐतिहासिक आकर्षण ने मेरी आंखों को एक नए अनुभव से परिचित कराया।

सिनेमा हॉल के मुख्य द्वार पर खड़े होकर, मुझे एक अद्भुत एहसास हुआ। विशाल और सुंदर प्रवेश द्वार, उसके ऊपर की ओर सजी-धजी सजावट और रेशमी पर्दे, सब कुछ मुझे जैसे किसी महल में ले जा रहे थे। अंदर जाते ही, हमने महसूस किया कि राजमंदिर केवल एक सिनेमा हॉल नहीं बल्कि एक शानदार अनुभव था। हमने अपने टिकट खरीदे और जैसे ही हॉल में प्रवेश किया तो उसकी ऊँचाई और सजावट ने हमें मंत्रमुग्ध कर दिया। सिनेमा हॉल के विशाल कक्ष की दीवारों पर लगे सुनहरे फ्रेम और झूमर ने माहौल को एक खास और भव्य रूप दिया था। मैं और मेरे पति दोनों ही बहुत उत्सुक थे।

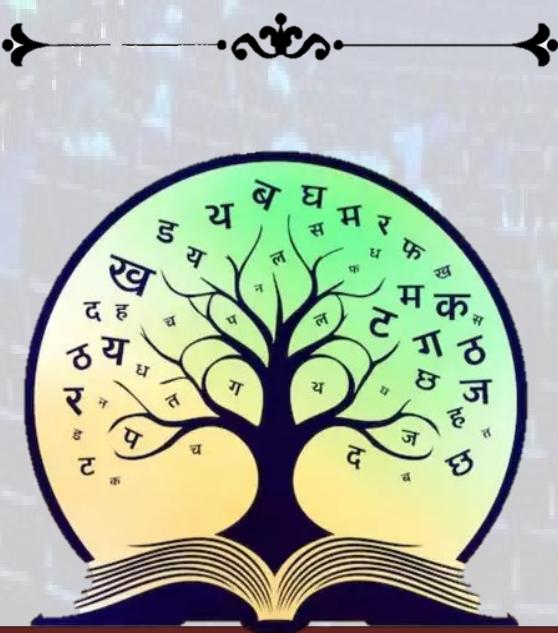
हमने अपनी सीटें लीं और फ़िल्म का ट्रेलर देखना शुरू किया। ट्रेलर के साथ ही मेरे मन में फ़िल्म को लेकर एक रोमांचक उत्सुकता पैदा हो गई। स्क्रीन पर बड़े-बड़े रंग, तेज आवाज और प्रभावशाली चित्रण ने मुझे पूरी तरह से अपनी ओर खींच लिया। मेरे पति ने मेरा हाथ पकड़ लिया और कहा, "आज का दिन हमारे लिए बहुत खास है।" उनकी बातों में एक ऐसा विश्वास था जो मेरे दिल को छू गया। फ़िल्म "बेटा" का पहला दृश्य ही इतना प्रभावशाली था कि हमारी आंखें स्क्रीन से हट ही नहीं रही थीं। अनिल कपूर और माधुरी दीक्षित की शानदार एक्टिंग ने हमें पूरी तरह से फ़िल्म के जादू में ढाल दिया। माधुरी की मासूमियत और अनिल कपूर का गंभीर चेहरा, दोनों ही भावनात्मक ताने-बाने को जीवंत कर रहे थे।

फिल्म के दौरान, जब भी किसी भावनात्मक या रोमांचक दृश्य की बारी आती, मेरा दिल धड़कनें तेज हो जातीं। साउंड सिस्टम की स्पष्टता और बैकग्राउंड म्यूजिक ने फिल्म के अनुभव को और भी विशेष बना दिया। हमने हँसते-रोते और हर एक दृश्य का आनंद लिया, और मुझे लगा कि मैं खूद उस फिल्म की दूनिया का हिस्सा बन गई हूँ।

फिल्म के बीच में एक छोटा सा इंटरवल था, जिसमें हमने ठंडे पानी की बोतलें लीं और कुछ स्नैक्स का आनंद लिया। बातचीत के दौरान, मेरे पति ने मुझे बताया कि यह फिल्म उनकी भी पसंदीदा थी, और वे चाहते थे कि हम इस पल को पूरी तरह से एन्जॉय करें। इस बातचीत ने मेरे दिल को और भी करीब लाया और हमें एक-दूसरे के साथ बिताए गए इस खास पल का महत्व समझाया। फिल्म के अंत तक आते-आते, मैंने महसूस किया कि मेरी आंखों में आंसू थे। फिल्म की कहानी, उसका संदेश और उसके किरदार मेरे दिल को छू गए थे। पर्दे पर खत्म होते ही हम दोनों ही चूप थे लेकिन हमारे चेहरे पर एक संतोषजनक मुस्कान थी।

सिनेमा हॉल से बाहर आते हुए, हम दोनों ने अनुभव साझा किया। मेरे पति ने कहा, "यह एक अविस्मरणीय पल था।" मैं पूरी तरह से सहमत थी। उस दिन का अनुभव मेरे दिल में हमेशा के लिए सहेज कर रख लिया गया। राजमंदिर सिनेमा हॉल और फ़िल्म "बेटा" के साथ बिताए गए वो खास पल. मेरे जीवन की अनमोल यादों में शामिल हो गए।

अब, जब भी मैं सिनेमा देखने जाती हूँ, तो उस पहले अनुभव की मासूमियत और खुशी को याद करके एक विशेष एहसास होता है। राजमंदिर की भव्यता और "बेटा" की कहानी मेरे दिल में हमेशा के लिए एक खास जगह बनाए रखेगी।





मोहन चन्द्र
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

देश बदल रहा है

देश बदल रहा है दुनिया बदल रही है हालात बदल रहे हैं। बहुत सुना और देखा भी, लेकिन इंद्रप्रस्थ के हालात नहीं बदले। मैंने अपने अभी तक के कार्यकाल में पाया की आज से लगभग 30 वर्ष पहले ऑडिट भवन (पूर्व में ए.जी.सी.आर.भवन) में कोई भी पार्किंग की समस्या नहीं थी। पार्किंग में कुछ साइकिल स्कूटर एवं 5-6 एंबेसडर कार एवं तीन चार मारुति कार दिखाई देती थी।

समय के साथ आज चार पहिया वाहन के लिए कार पार्किंग लगभग एक समस्या हो गई है। संभवतः बहुत जल्द ही यह आदेश ना आ जाए कि पार्किंग के कारण कार्यालय में छोटी नैनो कार ही लाएँ। उस समय सड़क पार करना या गाड़ी का यू टर्न लेना कार्यालय के सामने ही होता था जो आज यू टर्न बहुत लंबा हो गया है। पहले बस ही सवारी का साधन था और ऑटो एवं टैक्सी से आना-जाना एक स्टेट्स सिंबल माना जाता था लेकिन आज यदि आप कहीं जा रहे हैं तो गंतव्य स्थान पर पहुंचने के लिए भी भारी जाम से गुजरना पड़ता है।

कार्यालय परिसर में लगी लिफ्ट पर ऑपरेटर द्वारा एक लीवर की मदद से चलाई जाती थी तथा कोई भी कर्मचारी उसे स्वयं भी लीवर की मदद से ऊपर व नीचे जाने के लिए उपयोग कर सकते थे। कार्यालय परिसर में बारिश का पानी एक निरंतर बनी समस्या है इसी दौरान लिफ्ट का भी काम ना करना ‘कोई असामान्य घटना’ नहीं होती थी। कार्यालय में इस समय आने वाली बाधाओं में से एक कर्मचारियों के आवागमन की थी जिसे सवारी रिक्शा के माध्यम से निपटाया जाता था। कार्यालय परिसर में पानी इतना भर जाता था की कई दिनों तक मोटरों द्वारा पानी निकाला जाता था।

राजघाट चौक से आईटीओ चौक तक जो नाला था वह अब सीमेंट का होकर नाली बनकर ढक दिया गया है एवं साइड से पेड़ लगाकर हरा भरा कर दिया गया है। जो कि आज के समय में आईटीओ क्षेत्र में नैनीताल की तरह ठंडी रोड महसूस होती है। क्योंकि अक्सर लोग इसी के बीच घूमते हैं आज सभी कुछ बदल चुका है यहाँ तक की एजीसीआर भवन का नया नामकरण कर ‘ऑडिट भवन’ कर दिया गया है।

समय के साथ बदलाव भी हो चुका है लेकिन आज भी जब मानसून के बादल बरसात लेकर आते हैं तो आईटीओ के हालात ज्यादा ही बदल देते हैं। कार्यालय परिसर में आज वर्षा बाद भी जलभराव की वही स्थिति है क्योंकि सभी कार्यालय कभी एकमत होकर इस संदर्भ में निर्णय नहीं ले पाते हैं। बरसात में देखने से यह लगा कि ‘आज हम फिर कौन से दौर में’ है।



राजभाषा हिंदी पर विद्वानों के विचार

“हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।”

- मैथिलि शरण गुप्त

“जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।”

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

“किसी भाषा का विकास तब होता है जब वह जनसाधारण के हृदय में स्थान पाती है। हमने अपने संविधान में हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया है। इसलिए हमें देखना है कि सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग हो।”

- पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी

“देश को किसी संपर्क भाषा की आवश्यकता होती है और वह (भारत में) केवल हिंदी ही हो सकती है।”

- पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी

“राष्ट्रभाषा की जगह एक हिंदी ही ले सकती है, कोई दूसरी भाषा नहीं।”

- राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

“देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली हिंदी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है।”

- नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

“हिंदी देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती है। हमें इस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करना ही चाहिए।”

- रवीन्द्र नाथ ठाकुर



मोनू जांगिड
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

सफर रेलवे पुल से भाषाई पुल (अनुवाद) तक का

मैं, मोनू जांगिड, वर्तमान में भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग, नई दिल्ली में कनिष्ठ हिंदी अनुवादक के पद पर कार्यरत हूँ लेकिन मेरा यह सफर सीधा-सीधा कभी नहीं रहा। रेलवे के सहायक पुल के तकनीकी कार्य से लेकर आज एक अनुवादक के तौर पर भाषाई पुल का निर्माण करने तक का मेरा यह सफर कई उत्तार-चढ़ावों, सीखने की चाह और आत्म-संवर्धन की कहानी है।

रेलवे में प्रवेश: अनपेक्षित अवसर

सफर की शुरुआत जुलाई 2019 में हुई, जब मैंने भारतीय रेलवे में सहायक पुल के पद पर नियुक्ति प्राप्त की। यह नौकरी मेरे लिए एक संयोग था जिसे मैंने तब प्राप्त किया जब मैं एसएससी सीजीएल (कर्मचारी चयन आयोग) की तैयारी कर रहा था। रेलवे की यह नौकरी मेरे लिए एक अद्वितीय अवसर थी। उस समय मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं तकनीकी क्षेत्र में प्रवेश करूँगा। मुझे लगा कि सरकारी नौकरी तो मिल गई है पर यह मेरे लिए पूरी तरह से नया अनुभव होगा क्योंकि मेरे पास तकनीकी ज्ञान या पृष्ठभूमि नहीं थी।

हालांकि, मेरे परिवार के लिए यह एक खुशी का मौका था। मेरे माता-पिता हमेशा से मुझे एक स्थिर, सरकारी नौकरी में देखना चाहते थे और भारतीय रेलवे में नियुक्ति पाकर उनका सपना पूरा होता दिखा। उनकी खुशी ने मेरे मन में एक नई ऊर्जा और जोश भरा। मैं अपने परिवार का पहला सदस्य था जिसने रेलवे में नौकरी प्राप्त की थी।

शुरुआती कठिनाइयाँ और सीखने की चाह

रेलवे में सहायक पुल का पद तकनीकी ज्ञान और फ़िल्ड वर्क से भरा था। पहले ही दिन से मुझे यह समझ में आ गया था कि यह नौकरी मुझे अपनी शिक्षा और अनुभव से अलग दिशा में ले जाने वाली है। हमारे काम का संबंध पुलों की मरम्मत, निरीक्षण और तकनीकी कार्यों से था। मैंने न केवल तकनीकी शब्दावली को समझने की कोशिश की बल्कि फ़िल्ड में भी कई नई बातें सीखी, जिनके बारे में पहले मुझे कोई जानकारी नहीं थी।

शुरुआत में कार्य कठिन लगने लगा। जब कभी पुल की मरम्मत या निरीक्षण करना होता तो मुझे वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सहायता लेनी पड़ती। इन कार्यों में अलग-अलग प्रकार के पुलों की संरचना, उनमें लगने वाले उपकरणों और आवश्यक मरम्मत प्रक्रियाओं के बारे में सीखना मेरे लिए नया अनुभव था। धीरे-धीरे, मैंने अनुभव किया कि काम में न केवल तकनीकी ज्ञान बल्कि शारीरिक ताकत और धैर्य की भी आवश्यकता है।

रेलवे का यह काम चुनौतीपूर्ण था लेकिन मैंने इसे नई सीख के रूप में अपनाया। मेरी मेहनत को देखकर मेरे सहकर्मी और सीनियर मेरी सराहना करते थे। जब काम की वजह से रातों-रात जागना पड़ता या अन्य कठिनाई भरे समय का सामना करना पड़ता तो मैं यही सोचता था कि यह नौकरी केवल मेरी ही नहीं, बल्कि मेरे परिवार के लिए भी एक जिम्मेदारी है।

दोस्त और यादें

रेलवे के कार्य में व्यस्तता के बावजूद, मैंने वहाँ कुछ बेहतरीन दोस्त बनाए। हम सभी, चाहे जो भी पद पर हों, एक-दूसरे की मदद करने में कभी पीछे नहीं रहते थे। हम अक्सर एक साथ भोजन करते और एक-दूसरे की परेशानियों को साझा करते। पुलों पर काम करने के दौरान, जब गर्मी में पसीना बहता, तब साथियों की हँसी-मजाक और बातें सारा तनाव दूर कर देती थीं।

रेलवे में काम के अनुभवों में कई यादें भी हैं जिनका मैं आज भी स्मरण करता हूँ। कई बार जब हमें दूर-दराज के स्थानों पर जाना पड़ता तब एक अलग ही रोमांच महसूस होता। रेलवे में काम करने का अर्थ केवल अपने कार्य को पूरा करना नहीं है बल्कि टीमवर्क और एक-दूसरे का ख्याल रखना भी है। लेकिन इस यात्रा में मेरे साथ एक और अद्भुत साथी था—अंशु, मेरे मित्र की पाँच वर्षीय प्यारी बेटी। अंशु हमेशा मुझे अपना दोस्त कहती थी और जब भी मुझे घर जाने का समय आता, वह मुझे पूछती, "दोस्त, वापस कब आएगा?" वो मेरी प्यारी दोस्त, हमेशा मुस्कान के साथ मेरे पास आती और मेरी दिनचर्यों का हिस्सा बन चुकी थी।

जब मैंने रेलवे छोड़ने का निर्णय लिया और नई नौकरी के लिए दिल्ली जाने की तैयारी की तो रेलवे स्टेशन पर मुझे छोड़ने आए सभी दोस्त भावुक थे और ट्रेन चलने के बाद मैं बड़ी मुश्किल से आँसुओं को रोक पाया था। मुझे बाद में पता चला की अंशु भी उस दिन बहुत रोई थी। मुझे लगा जैसे एक छोटी सी बच्ची की जिंदगी में अपना कुछ खास स्थान छोड़कर जा रहा हूँ तथा वलसाड के दोस्तों एवं परिवार से जुड़ी ढेर सारी यादें अपने साथ ले जा रहा हूँ।

नई दिशा की ओर

रेलवे में काम करते हुए मैंने महसूस किया कि मेरे पास तकनीकी क्षेत्र में उन्नति के सीमित अवसर हैं क्योंकि मेरे पास कोई इंजीनियरिंग डिग्री या तकनीकी योग्यता नहीं थी। इस विचार ने मुझे अपनी रुचि और विशेषज्ञता के अनुसार नए अवसरों की खोज करने के लिए प्रेरित किया।

अनुवाद कार्य में हमेशा से मेरी दिलचस्पी रही थी। मैंने सोचा कि क्यों न सरकारी क्षेत्र में हिंदी अनुवादक के पद के लिए तैयारी शुरू करूँ। इस निर्णय के साथ मैंने अपनी तैयारी शुरू की और काम के साथ अध्ययन को भी संतुलित करने का प्रयास किया। कई बार मुझे देर रात तक पढ़ाई करनी पड़ती लेकिन रेलवे की नौकरी ने मुझे मेहनत और धैर्य से कार्य करने की आदत सिखा दी थी। मैंने कभी अपनी नौकरी से बचने का प्रयास नहीं किया; चाहे काम हो या पढ़ाई, मैंने दोनों को समान महत्व दिया।

कठिन परिश्रम और धैर्य का फल

मेरे निरंतर परिश्रम और समर्पण का परिणाम तब आया, जब मुझे भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग में कनिष्ठ हिंदी अनुवादक के पद पर चयनित कर लिया गया। यह मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण पल था। मैंने रेलवे से तकनीकी इस्तीफा देकर 27 जून 2023 को अपनी नई नौकरी जॉइन की। मेरे परिवार, दोस्तों और रेलवे के सहकर्मियों के लिए यह एक बड़ा मील का पत्थर था।

नई नौकरी में अनुवाद कार्य का क्षेत्र भी मेरे लिए नया था खासकर क्योंकि यह लेखापरीक्षा और लेखा जैसे विषयों पर केंद्रित था। यह भाषा की गहरी समझ के साथ-साथ तकनीकी ज्ञान की भी मांग करता है। हालांकि, मैंने इस चुनौती को स्वीकार किया और नए सिरे से अनुवाद कार्य की बारीकियों को समझने का प्रयास शुरू किया। यहाँ भी मेरी मेहनत और समर्पण ने मुझे प्रेरित किया कि मैं इस कार्य में अपना सर्वश्रेष्ठ दृঃ।

भाषाई पुल (अनुवाद): एक नई पहचान

आज, मैं खुद को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखता हूँ जिसने रेलवे के पुलों से लेकर भाषा के पुल तक का निर्माण किया है। जहाँ पहले मैं भौतिक पुलों की मरम्मत और निरीक्षण का कार्य करता था अब मैं भाषा के माध्यम से अर्थात् अनुवादक के रूप में अपने कार्यों का निष्पादन कुशलतापूर्वक करने का प्रयास करता हूँ। रेलवे में बिताए गए सालों ने मुझे न केवल कार्य के प्रति समर्पण सिखाया, बल्कि टीमवर्क, धैर्य और अनुशासन का भी पाठ पढ़ाया।

मेरे परिवार के लिए यह एक गर्व की बात है कि मैं एक सरकारी नौकरी में हूँ और देश की सेवा में अपना योगदान दे रहा हूँ। मेरे माता-पिता अक्सर मुझे प्रोत्साहित करते हैं कि मैं अपने कार्य में ओर निपुण बनूँ और जितना संभव हो, भाषा के क्षेत्र में भी योगदान दूँ।

एक प्रेरणा की तरह

मेरा यह सफर किसी के लिए प्रेरणा हो सकता है, खासकर उन लोगों के लिए जो अपने कार्यक्षेत्र में चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। मैंने सीखा कि मेहनत और समर्पण से कोई भी कठिनाई पार की जा सकती है। चाहे वह रेलवे में तकनीकी कार्य हो या लेखापरीक्षा विभाग में अनुवाद कार्य अगर आप अपने कार्य को समर्पण और लगन से करते हैं तो सफलता आपके कदमों में होती है।

मेरा यह मानना है कि किसी भी क्षेत्र में अपने अनुभवों और सीखों को संजोना महत्वपूर्ण है। हर मुश्किल काम, हर कठिन समय, और हर नया कार्य हमें कुछ न कुछ सिखाता है। रेलवे में बिताए गए मेरे वर्ष और दोस्तों के साथ बिताए गए वो पल मेरे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा हैं जो मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

आज भी जब मैं अपने पुराने दोस्तों से बात करता हूँ तो हम उन दिनों को याद करते हैं और वे यादें मुझे फिर से उत्साहित कर देती हैं। मेरे जीवन की इस यात्रा ने मुझे यह सिखाया है कि आप अपने सपनों को तब भी पूरा कर सकते हैं जब आप उन परिस्थितियों में हों जो आपके अनुकूल न हों। हर कठिनाई एक अवसर है, और हर अनुभव एक सीख।

निष्कर्ष

रेलवे में सहायक पुल के पद से लेकर आज एक अनुवादक के रूप में कार्य करना, मेरे लिए केवल कैरियर का परिवर्तन नहीं बल्कि एक आंतरिक बदलाव भी है। यह सफर मुझे अपने लिए एक नई पहचान देने वाला साबित हुआ। मेरे लिए यह केवल नौकरी नहीं बल्कि मेरे आत्म-संवर्धन और अपने परिवार, समाज और देश के लिए कुछ कर दिखाने की कहानी है।

मुझे उम्मीद है कि मेरी यह यात्रा उन सभी लोगों को प्रेरित करेगी, जो अपने कार्य में चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। मेहनत, धैर्य, और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ने पर हर व्यक्ति अपने सपनों को साकार कर सकता है।





हिंदी पखवाड़ा - 2024

संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में केंद्र सरकार के कार्यालयों में प्रतिवर्ष राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य हेतु सितंबर माह में हिंदी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा/माह का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में, महानिदेशक लेखापरीक्षा, उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य, नई दिल्ली कार्यालय में हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इसका शुभारंभ हिंदी दिवस एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन (14 एवं 15 सितंबर, 2024) माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के कर-कमलों से नई दिल्ली के भारत मंडपम् से हुआ।



माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह, नई दिल्ली के भारत मंडपम् में आयोजित हिंदी दिवस एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में दीप प्रज्ज्वलित करते हुए

कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा-2024 के आयोजन हेतु महानिदेशक महोदया के निदेशानुसार विभिन्न समितियों/निर्णायक मंडल का गठन किया गया। हिंदी दिवस (14 सितंबर, 2024) का नई दिल्ली के भारत मंडपम् से शुभारंभ के पश्चात हमारे कार्यालय में दिनांक 19.09.2024 से हिंदी पखवाड़ा से संबंधित कार्यक्रम/गतिविधियाँ शुरू की गई। हिंदी पखवाड़ा-2024 के आयोजन हेतु कार्यक्रमों की श्रेणी में सर्वप्रथम दिनांक 19.09.2024 को “राजभाषा कार्यान्वयन की दशा एवं दिशा” पर विशेष वार्ता कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसके लिए विषय विशेषज्ञ के रूप में श्री पूर्णचंद्र ठंडन, पूर्व सीनियर प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय एवं श्रीमती ज्योति शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय को आमंत्रित किया गया। इस कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञों ने राजभाषा कार्यान्वयन में आने वाली बाधाओं एवं चुनौतियों पर बोलते हुए तथा इस दिशा में सकारात्मक कदम उठाते हुए देश की राजभाषा में काम करने के लिए कार्मिकों को अभिप्रेरित किया एवं कार्मिकों द्वारा पुछे गए प्रश्नों के सटीक उत्तर भी दिए गए।



वार्ता कार्यक्रम विषय विशेषज्ञ
श्री पूरनचंद टंडन, पूर्व सीनियर प्रोफेसर,
दिल्ली विश्वविद्यालय
एवं
श्रीमती ज्योति शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर,
शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय



वार्ता कार्यक्रम के दौरान श्री सुशांत रंजन, निदेशक विषय विशेषज्ञों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए मंच पर आसीन श्रीमती एस.आहादिनी पंडा (महानिदेशक), श्रीमती ज्योति शर्मा(ए.प्रो.,शिवाजी कॉलेज), श्री पूरनचंद टंडन(पूर्व सी.प्रोफेसर,दिल्ली विश्वविद्यालय), श्री हर्ष कपूर (निदेशक), श्री रामशरण मीना (उप निदेशक) एवं श्री सुशांत रंजन (निदेशक)
क्रमशः बाएं से दाएं

इसके साथ ही दिनांक 19.09.2024 “संघ सरकार की राजभाषा नीति एवं नियम” विषय पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसके लिए अतिथि संकाय सुश्री पूजा साव, वरिष्ठ अधिकारी, गेल इंडिया (राजभाषा) को आमंत्रित किया गया। कार्यशाला में अतिथि संकाय ने संघ सरकार की राजभाषा नीति एवं नियम विषय पर जानकारी दी तथा कार्यालय के प्रतिभागियों को हिंदी की संवेदानिक स्थिति, राजभाषा अधिनियम, नियमों एवं उसके कार्यान्वयन पर व्यापक जानकारी प्रदान की।



“संघ सरकार की राजभाषा नीति एवं नियम” विषय पर आयोजित हिंदी कार्यशाला की समाप्ति पर अतिथि संकाय सुश्री पूजा साव, वरिष्ठ अधिकारी, गेल इंडिया (राजभाषा) कार्यालय के श्री राजबीर, हिंदी अधिकारी एवं कार्यशाला प्रतिभागियों के साथ

इसके पश्चात दिनांक 20.09.2024 को कविता पाठ कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय परिसर के विभिन्न कार्यालयों के प्रतिभागियों ने भाग लिया एवं अपनी काव्य कौशल से सभी कार्मिकों के मन को छुआ।



कविता पाठ कार्यक्रम के दौरान मंचासीन श्री हर्ष कपूर (निदेशक) एवं श्री रामशरण मीना (उप-निदेशक) की उपस्थिति में ए.जी.सी.आर. भवन के विभिन्न कार्यालयों के अधिकारी एवं कर्मचारी कविता पाठ करते हुए

इसी दिन अपराह्न में हिंदी कार्यशाला के दूसरे दिन अतिथि संकाय श्री ओम प्रकाश, सहायक आचार्य, दिल्ली विश्वविद्यालय को “हिंदी के ई-टूल्स” विषय पर कार्यशाला हेतु आमंत्रित किया गया। हिंदी के ई-टूल्स के माध्यम से तकनीकी रूप से राजभाषा में काम करने के लिए कार्मिकों में विश्वास पैदा करने और तकनीकी रूप से हिंदी में सक्षम बनाने का प्रयास किया।



“हिंदी के ई-टूल्स” विषय पर आयोजित कार्यशाला के दौरान अतिथि संकाय श्री ओम प्रकाश, सहायक आचार्य, दिल्ली विश्वविद्यालय, श्री सुशांत रंजन, निदेशक एवं कार्यशाला के प्रतिभागियों के साथ

हिंदी पखवाड़ा - 2024 की प्रतियोगिताओं का अंतिम दिन राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के नाम रहा जिसका आयोजन दिनांक 25.09.2024 को किया गया। इस प्रतियोगिता में कार्यालय की नियमित प्रकृति के अनुरूप विषयों पर विज़ुअल्स के माध्यम से प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले कार्मिकों ने न केवल राजभाषा के प्रति संवैधानिक एवं नैतिक दायित्व को सरलता से समझा बल्कि प्रतियोगिता में भागीदारी के साथ-साथ अपने ज्ञान को भी अद्यतित किया।

हिंदी पखवाड़ा-2024 पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह का आयोजन दिनांक 30.09.2024 को किया गया। हिंदी अधिकारी ने उक्त कार्यक्रम में हिंदी पखवाड़ा-2024 के दौरान संचालित कार्यक्रमों/प्रतियोगिताओं के विषय में विस्तृत रूप से बताया। साथ ही हिंदी अधिकारी ने नई दिल्ली के भारत मंडपम् में आयोजित हिंदी दिवस एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के विषय में महत्वपूर्ण कार्यों के बारे में बताया।

पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह के दौरान महानिदेशक महोदया ने वर्ष 2023-24 के दौरान हिंदी में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु वित एवं विनियोग अनुभाग को चल वैजयंती शील्ड प्रदान की और हिंदी मौलिक टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन योजना (2023-24) के विजेताओं को (क्रमशः प्रथम-₹5000, प्रथम-₹5000, द्वितीय-₹3000 एवं द्वितीय-₹3000) तथा पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं (प्रथम-₹2500, द्वितीय-₹2000, तृतीय-₹1500 एवं चतुर्थ-₹1000) को प्रमाण-पत्र से सम्मानित करते हुए प्रोत्साहन/पुरस्कार राशि का भुगतान सीधे संबंधित कार्मिक के बैंक खाते में किया गया। महानिदेशक महोदया ने हिंदी पखवाड़ा-2024 के आयोजन समिति/निर्णायक मंडल के सभी सदस्यों को प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित करने के साथ-साथ सभी विजेताओं को हिंदी पखवाड़ा-2024 के सफल संचालन हेतु बधाईयां दी तथा हिंदी पखवाड़ा के आयोजन को इसी उत्साह और उमंग से जारी रखने के निदेश दिए।

अंत में हिंदी अधिकारी ने हिंदी पखवाड़ा-2024 के सफल आयोजन के लिए हिंदी पखवाड़ा आयोजन समिति, निर्णायक मंडल आदि, स्थापना अनुभाग, ईडीपी अनुभाग तथा सभी संबंधित को धन्यवाद जापित करते हुए भविष्य में पखवाड़े को ओर बेहतर बनाने के लिए कार्मिकों से सुझाव राजभाषा अनुभाग को भेजने का अनुरोध किया तथा इसके साथ ही पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह की समाप्ति की औपचारिक घोषणा महानिदेशक महोदया के निर्देशानुसार की।

हिंदी पख्ताड़ा – 2024 पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह के दौरान महानिदेशक महोदया एवं कार्यालय के अन्य समूह अधिकारी, मौलिक टिप्पण एवं प्रोत्साहन योजना (2023-24) एवं प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाण-पत्र को सम्मानित करते हुए



**हिंदी पखवाड़ा – 2024 पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह के दौरान महानिदेशक
महोदया कार्यालय के वित एवं विनियोग अनुभाग को वर्ष 2023-24 के दौरान हिंदी में
श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु चल वैजयंती शील्ड से तथा हिंदी पखवाड़ा आयोजन समिति के
सदस्यों को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित करते हुए**



हिंदी पखवाड़ा – 2024 पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह के दौरान मौलिक टिप्पण एवं प्रोत्साहन योजना (2023-24)

एवं प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची

मौलिक टिप्पण एवं प्रोत्साहन योजना (2023-24)



प्रथम

नरपत
व.ले.प.



प्रथम

अनिल कुमार
क.सहा.



द्वितीय

हेमराज मीना
स.ले.प.अ.



द्वितीय

प्रमोद कुमार गुप्ता
व.ले.प.

मसौदा एवं टिप्पण लेखन प्रतियोगिता



प्रथम

दीपक नरवाल
स.ले.प.अ.



द्वितीय

नेहा गर्ग
स.ले.प.अ.



तृतीय

हरेन्द्र सिंह
व.ले.प.



चतुर्थ

अजय कुमार
स.ले.प.अ.

अनुवाद प्रतियोगिता



प्रथम

कविता गुप्ता
स.ले.प.अ.



द्वितीय

नेहा गर्ग
स.ले.प.अ.



तृतीय

मानवेन्द्र झा
स.ले.प.अ.



चतुर्थ

प्रशांत कुमार
स.ले.प.अ.

वाद-विवाद प्रतियोगिता



प्रथम

सचिन
व.ले.प.



द्वितीय

समीर आसिफ
स.ले.प.अ.



तृतीय

हेमलता शर्मा
ले.प.

सार-लेखन प्रतियोगिता



प्रथम

दीपक नरवाल
स.ले.प.अ.



द्वितीय

कविता गुप्ता
स.ले.प.अ.



तृतीय

मानवेन्द्र झा
स.ले.प.अ.



चतुर्थ

हरविंदर कौर
स.ले.प.अ.

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता



प्रथम

हेमलता शर्मा
ले.प.



द्वितीय

अविहेम त्यागी
ले.प.



तृतीय

हिमांशु
ले.प.



चतुर्थ

शुभम शर्मा
ले.प.

प्राज्ञ परीक्षा परिणाम (जनवरी-मई 2024 सत्र)



नाम:- सुमन दास

पदनाम:- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्राप्तांक:- 157/200 (78.50%)

पुरस्कार राशि:- ₹2400/-

(12 माह की अवधि की वेतन वृद्धि के बराबर वैयक्तिक वेतन)



नाम:- देवेश नारायण गुप्ता

पदनाम:- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्राप्तांक:- 145/200 (72.50%)

पुरस्कार राशि:- ₹2400/-

(12 माह की अवधि की वेतन वृद्धि के बराबर वैयक्तिक वेतन)



पारंगत परीक्षा परिणाम (जनवरी-मई 2024 सत्र)



नाम:- नेमी कुमार जैन
पदनाम:- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्राप्तांक:- 157/200 (78.50%)
पुरस्कार राशि:- ₹10,000/-



नाम:- दिनेश कुमार
पदनाम:- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्राप्तांक:- 153/200 (76.50%)
पुरस्कार राशि:- ₹10,000/-



नाम:- किरनजोत कौर
पदनाम:- वरिष्ठ लेखापरीक्षक
प्राप्तांक:- 152/200 (76.00%)
पुरस्कार राशि:- ₹10,000/-



नाम:- रमेश सिंह नेगी
पदनाम:- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्राप्तांक:- 150/200 (75.00%)
पुरस्कार राशि:- ₹10,000/-

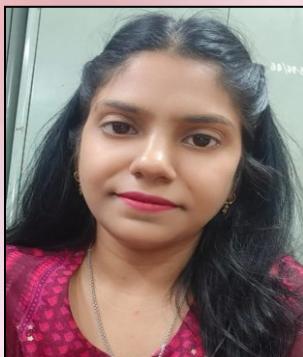
पारंगत परीक्षा परिणाम (जनवरी-मई 2024 सत्र)



नाम:- आकांक्षा
पदनाम:- सहायक पर्यवेक्षक
प्राप्तांक:- 148/200 (74.00%)
पुरस्कार राशि:- ₹10,000/-



नाम:- मोहित शर्मा
पदनाम:- लेखापरीक्षक
प्राप्तांक:- 147/200 (73.50%)
पुरस्कार राशि:- ₹10,000/-



नाम:- मनीषा जाखड़
पदनाम:- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्राप्तांक:- 146/200 (73.00%)
पुरस्कार राशि:- ₹10,000/-



नाम:- रेनू
पदनाम:- सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्राप्तांक:- 145/200 (72.50%)
पुरस्कार राशि:- ₹10,000/-

श्रीमती एस. आह्लादिनी पंडा, महानिदेशक (लेखापरीक्षा) राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान कार्यालय की ई-पत्रिका “नव इन्द्रप्रस्थ अंक-4 2023” का विमोचन करते हुए



नव इन्द्रप्रस्थ अंक-4 2023 के अभिमत

सामग्र्य सं. 28 / दि. 27.02.2024

गुरवीन सिधु, भालौप. & लेसे
Gurveen Sidhu, I&AS

महानिवेशक लेखापरीका
परिवरण एवं वैज्ञानिक विभाग
ए.जी.सी.आर. भवन, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट,
नई दिल्ली - 110 002

**DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
ENVIRONMENT & SCIENTIFIC DEPARTMENTS**
A.G.C.R. BUILDING, I.P. ESTATE
NEW DELHI-110 002

प्रिय आहलादिनी,

मैं आपके कार्यालय की पत्रिका नव इन्द्रप्रस्थ के चौथे अंक के विमोचन के उपलब्ध्य पर आपको एवं पत्रिका के संपादक मण्डल एवं समस्त पत्रिका परिवार को हांदिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ। आपकी पत्रिका ने मेरे जान की सजीवती के लिए अद्वितीय और शिक्षाप्रद जानकारी प्रदान की है। आपकी लेखनी का अद्वितीय स्वरूप और आवश्यक समाचार इस पत्रिका के लिए महत्वपूर्ण बताता है।

मैं आपकी इस कृति की सहानुकरता हूँ एवं राजभाषा हिन्दी के निरंतर विकास के लिए समर्पित इस पत्रिका के सभी सदस्यों को उनके अथक प्रयासों और अद्भुत योगदान के लिए पुण्य धन्यवाद एवं अनेकानेक शुभकामनाएँ देती हूँ।

प्रति

एस. आहलादिनी पांडा
महानिवेशक लेखापरीका
कार्यालय महानिवेशक लेखापरीका
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य,
नई दिल्ली - 110 002

महानिवेशक लेखापरीका
परिवरण एवं वैज्ञानिक कार्य
दिल्ली, 21 MAR 2024
मान. प्र. सम्बोधन कार्यालय

RECEIVED
29 FEB 2024

E-mail : pdaesd@cag.gov.in
Ph. : 91-11-23702348
Fax : 91-11-23702353

प्रति कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) हरियाणा,
लेखा भवन, प्लाट नं. 4 व 5, सीकर 33-वी चण्डीगढ़-160020
टेलीफोन नं. 2610957, 2613211, 2615382
फैक्स नं. 0172-2603824
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA
LEKHA BHAWAN PLOT NO. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160020
E-mail: ae@haryana.cag.gov.in
EPABX No. 2610957, 2613211, 2615382 Fax No- 0172-2603824

002666

हिन्दी कार्यालय पत्रिका/2023-24/303
दिनांक: 19.03.2024

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय महानिवेशक लेखापरीका, उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य,
ए.जी.सी.आर. भवन, आई.पी. एस्टेट,
नई दिल्ली-110002

महोदय,
विषय : कार्यालयीन पत्रिका नव इन्द्रप्रस्थ (ई-पत्रिका) के चौथे अंक (2023) के प्रेषण के संबंध में।

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 14.02.24 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका नव इन्द्रप्रस्थ के चौथे अंक (2023) की ई-पत्रि समाविष्ट वात्सरीय, जानवरीय एवं प्रसंस्करणीय है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बहुत ही आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट श्री राजबीर, हिन्दी अधिकारी की दिपाली 'शीर्षक से अधीनस्थ तक जानवरीय है।' सुनी हेमता शर्मा की कवाय रचना 'द्विष्टी' (कृष्ण की वस्त्रो) पठनीय है।

इसके अतिरिक्त श्री अनिल कुमार की कविता 'हुनार' एवं श्री रोहित गांगुली की कविता 'किसान की आत्महत्या' पठनीय है।

पत्रिका के कठोर संकलन हेतु संपादक-मण्डल बधाई के पावर हैं। पत्रिका के उत्तरावर भविष्य हेतु शुभकामनाएँ। यह पत्र वरि. उप महालेखाकार (प्रा.) महोदय के अनुमोदन से भेजा जा रहा है।

सामग्र्य सं. 50 / दि. 27.03.2024

भवदीप,
(डॉ. सुषी पत्रिका)
हिन्दी अधिकारी

सामग्र्य सं. 50 / दि. 27.03.2024

भारतीय लेखापरीका और लेखा विभाग
कार्यालय महानिवेशक लेखापरीका (व्यवसंचाल), दिल्ली
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT,
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
(INFRASTRUCTURE), DELHI

दिनांक / Dated 4/4/24
000001

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महानिवेशक (लेखापरीका)
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
नई दिल्ली-110002

विषय: हिन्दी ई-पत्रिका 'नव इन्द्रप्रस्थ (ई-पत्रिका)' के चौथे अंक की प्राप्ति संबंधी।

महोदय,
आपके कार्यालय से प्रकाशित ई-पत्रिका नव इन्द्रप्रस्थ की प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए धन्यवाद। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ आकर्षक है, पत्रिका के विविध घटक, जैसे संपादन, समाचार, सजावट, रचनाएँ आदि सभी उत्कृष्ट हैं। पत्रिका में प्रकाशित समस्त रचनाएँ पठनीय, रोचक एवं उत्कृष्ट हैं, जिसके लिए सभी रचनाकारों को साहस्रादा देती है। पत्रिका में मुख्यतः श्री गोदू जांगिड की जीवन-चर्चा एक फल की जुबानी, श्री मानवेन्द्र झा की हिन्दी भाषा, उद्योग एवं विकास, श्री रोहित गांगुली की किसान की अनमन्त्या व 'गौ', सुनी अनील कुमार की 'डर', श्री राजबीर की 'शीर्षक से अधीनस्थ तक तथा पत्रिका में सभी कविताएँ आकर्षक का बन रहे हैं। राजभाषा संबंधी नितिविधीयों की साथि प्रस्तुति से पत्रिका और श्री आकर्षक है। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल प्रशंसा का पाव है। नव इन्द्रप्रस्थ परिवार को उत्तरावर प्रगति एवं कुशल संपादन के लिए संपादक मण्डल परिवार को और से देते सभी शुभकामनाएँ।

सं. 2 रा. आ. दिनांक 4/4/24
हिन्दी अधिकारी (रा.अ.)

महोदय, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली-110002
3rd Floor, A-Wing, Indraprastha Bhawan, I.P. Estate, New Delhi-110002
दूरध्वान/Tele.: 011-23378473, E-mail : pdainfradi@cag.gov.in

002666

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) हरियाणा,
लेखा भवन, प्लाट नं. 4 व 5, सीकर 33-वी चण्डीगढ़-160020
टेलीफोन नं. 2610957, 2613211, 2615382
फैक्स नं. 0172-2603824
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA
LEKHA BHAWAN PLOT NO. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160020
E-mail: ae@haryana.cag.gov.in
EPABX No. 2610957, 2613211, 2615382 Fax No- 0172-2603824

हिन्दी कार्यालय पत्रिका/2023-24/303
दिनांक: 19.03.2024

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय महानिवेशक लेखापरीका, उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य,
ए.जी.सी.आर. भवन, आई.पी. एस्टेट,
नई दिल्ली-110002

महोदय,
विषय : कार्यालयीन पत्रिका नव इन्द्रप्रस्थ (ई-पत्रिका) के चौथे अंक (2023) के प्रेषण के संबंध में।

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 14.02.24 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका नव इन्द्रप्रस्थ के चौथे अंक (2023) की ई-पत्रि समाविष्ट वात्सरीय, जानवरीय एवं प्रसंस्करणीय है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बहुत ही आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट श्री राजबीर, हिन्दी अधिकारी की दिपाली 'शीर्षक से अधीनस्थ तक जानवरीय है।' सुनी हेमता शर्मा की कवाय रचना 'द्विष्टी' (कृष्ण की वस्त्रो) पठनीय है।

इसके अतिरिक्त श्री अनिल कुमार की कविता 'हुनार' एवं श्री रोहित गांगुली की कविता 'किसान की आत्महत्या' पठनीय है।

पत्रिका के कठोर संकलन हेतु संपादक-मण्डल बधाई के पावर हैं। पत्रिका के उत्तरावर भविष्य हेतु शुभकामनाएँ। यह पत्र वरि. उप महालेखाकार (प्रा.) महोदय के अनुमोदन से भेजा जा रहा है।

सामग्र्य सं. 50 / दि. 27.03.2024

भवदीप,
(डॉ. सुषी पत्रिका)
हिन्दी अधिकारी

002430

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (वा. प्रा.)
दिल्ली, श्रीमती-171 003
OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

दिनांक- 27.02.2024

सेवा में,
कार्यालय महानिवेशक (लेखापरीका)
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
नई दिल्ली-110002

विषय: कार्यालयीन पत्रिका नव इन्द्रप्रस्थ (ई-पत्रिका) के चौथे अंक (2023) ई पत्रिका के प्रेषण के संबंध में।

महोदय,
आपके कार्यालय की प्रकाशित ई-पत्रिका नव इन्द्रप्रस्थ (ई-पत्रिका) के चौथे अंक (2023) की प्रति प्राप्त हुई है, जिसमें प्रदृशित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट एवं जानवरीय हैं। हिन्दी भाषा की सुजनशीलता के उत्थान हेतु आपका प्रयास सराहनीय है। जिसके लिये आपका राजभाषा परिवार बधाई का पाव है।

भवदीप

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (वा.)
(हिन्दी)

सामग्र्य सं. 34/दिवांका/2023-2024/273
दिनांक: 27.02.2024

सेवा में,
कार्यालय महानिवेशक (लेखापरीका)
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
नई दिल्ली-110002

विषय: कार्यालयीन पत्रिका नव इन्द्रप्रस्थ (ई-पत्रिका) के चौथे अंक (2023) ई पत्रिका के प्रेषण के संबंध में।

महोदय,
आपके कार्यालय की प्रकाशित ई-पत्रिका नव इन्द्रप्रस्थ (ई-पत्रिका) के चौथे अंक (2023) की प्रति प्राप्त हुई है, जिसमें प्रदृशित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट एवं जानवरीय हैं। हिन्दी भाषा की सुजनशीलता के उत्थान हेतु आपका प्रयास सराहनीय है। जिसके लिये आपका राजभाषा परिवार बधाई का पाव है।

गर्टन कैसल विलिंग, श्रीमती-171 003 दूरध्वान: 0177-2652602 / 2651033, फैक्स: 0177-2651743
Gorton Castle Building, Shimla-171 003 Phone: 0177-2652602/2651033, Fax: 0177-2651743
E-mail: agas@himachalpradesh.cag.gov.in

२०२४/१८/प्रिंटेक्ट - २१-०२-२०२४

क्षेत्रीय सत्राना निर्णय एवं जान संस्थान
भारतीय सेवापरीक्षा एवं लेखा प्रयोग
२०. सरोजरे. नायदु. मार्ग. प्रयागराज - २११००१

REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
२०. Sarojini Naidu Marg, Prayagraj - २११००१
Phone : २४२१३६४, २४२१०६३, २६२४४६७ Fax : ०५३२-२४२३४८५

पत्रक - क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यालय (१३२) / २०२३-२४/५३७ दिनांक : २०.०२.२०२४

संवाद में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय - महानिदेशक लेखापरीक्षा
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य,
नई दिल्ली - ११०००२

विषय:- हिंदी पत्रिका 'नव इन्डिप्रस्ट' के चतुर्थ अंक की पावती।

संदर्भ:- पत्रक प्रशा./रा.भा./तब इन्द्रप्रस्थ/१२/२०२३-२४/२४ दिनांक १४.०२.२०२४

महादय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'नव इन्डिप्रस्ट' का चतुर्थ अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए सारद धन्यवाद।

पत्रिका की साज-सज्जा एवं कलेवर आकर्षक है। पत्रिका में सम्बन्धित समस्त रसमानों जानवादी एवं बोधगम्य है। पत्रिका प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यालयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में सम्बन्धित कार्यालयन गतिविधियों के वित्र एवं बच्चों द्वारा बनाए गए प्रिंटेक्ट पत्रिकाएँ शोभा को और बढ़ा रहे हैं।

पत्रिका के बेहतरीन संचादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक धन्याई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

महादय,

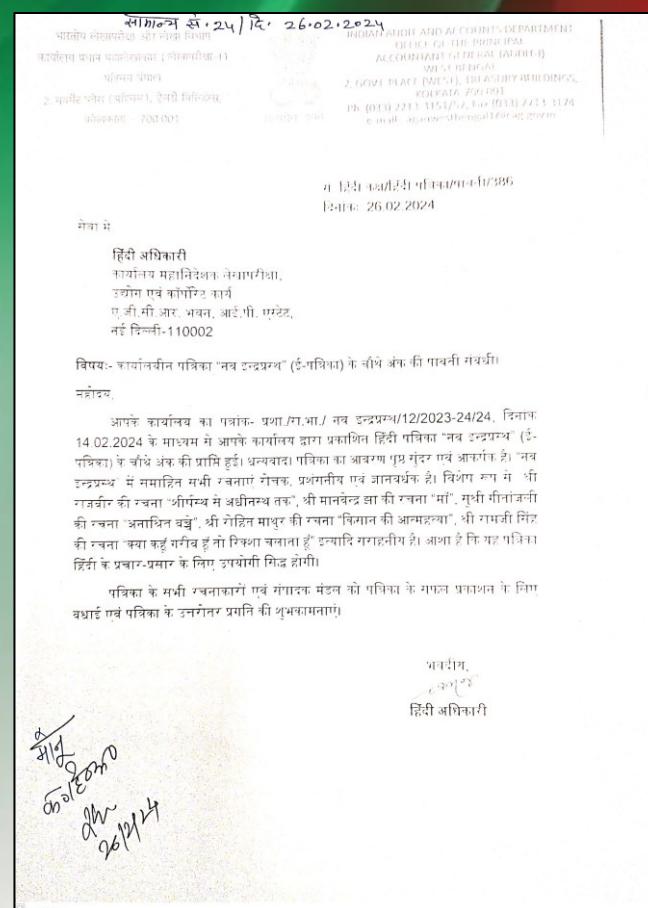
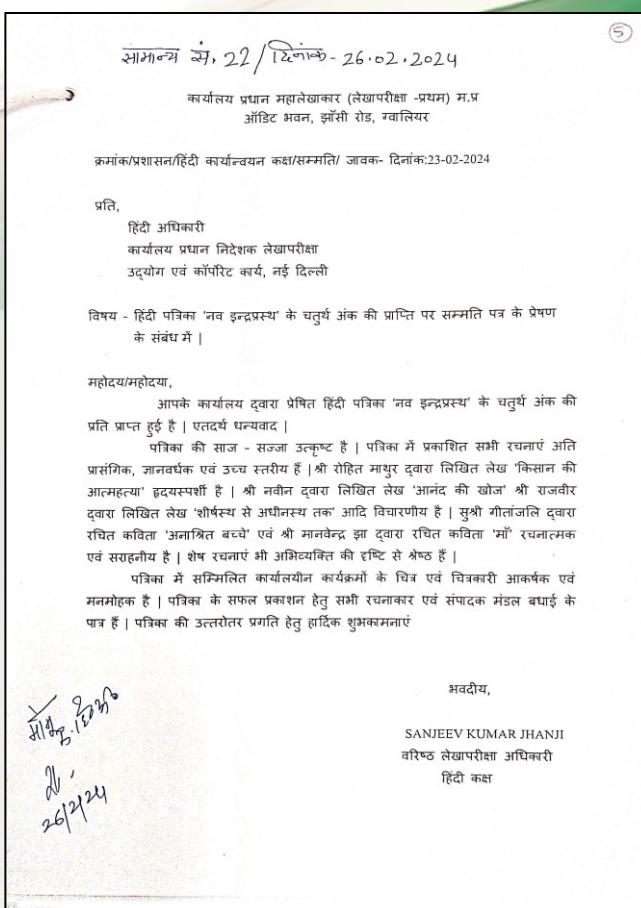
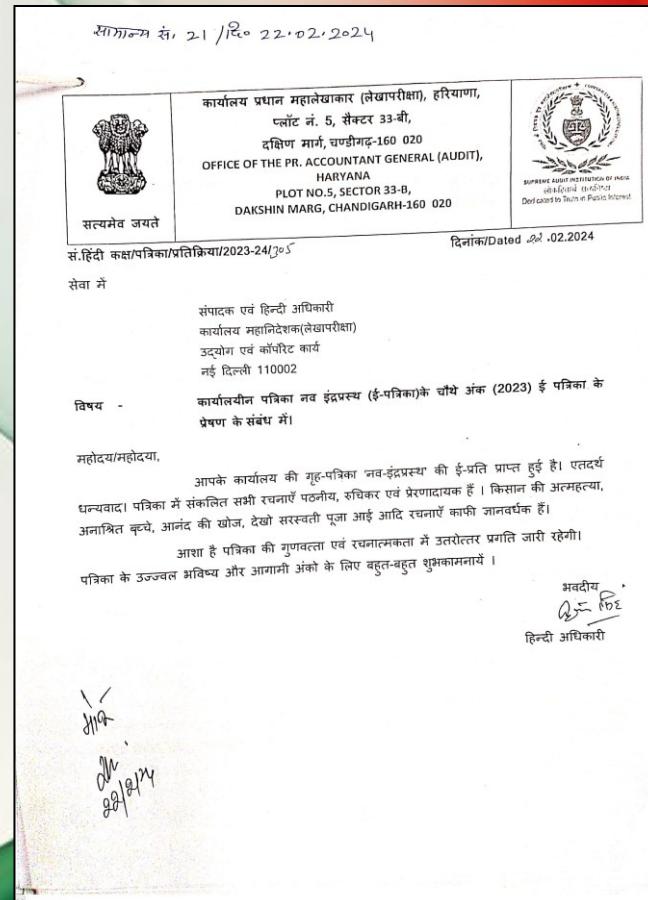
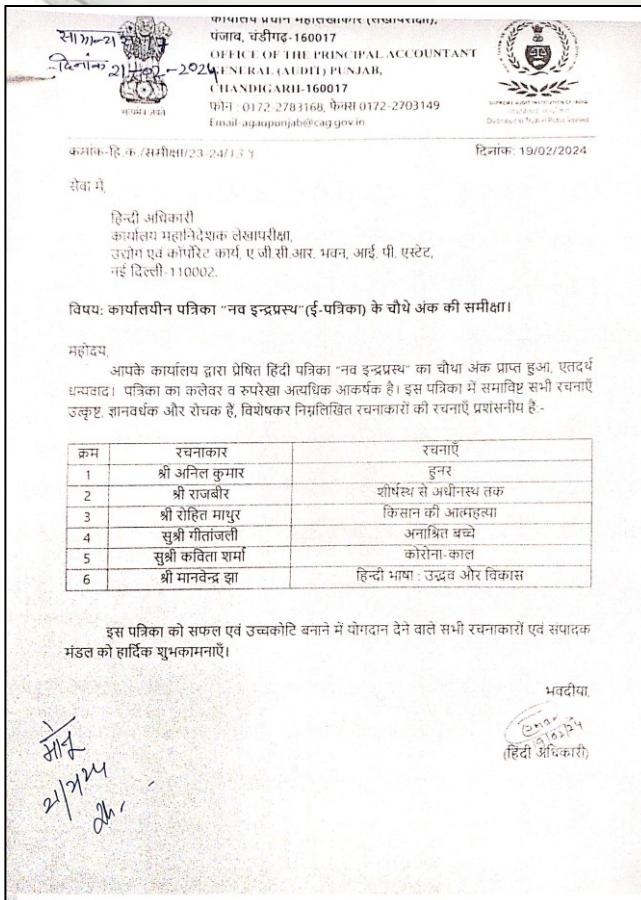
विश्व प्रशासनिक अधिकारी/सत्राहकार

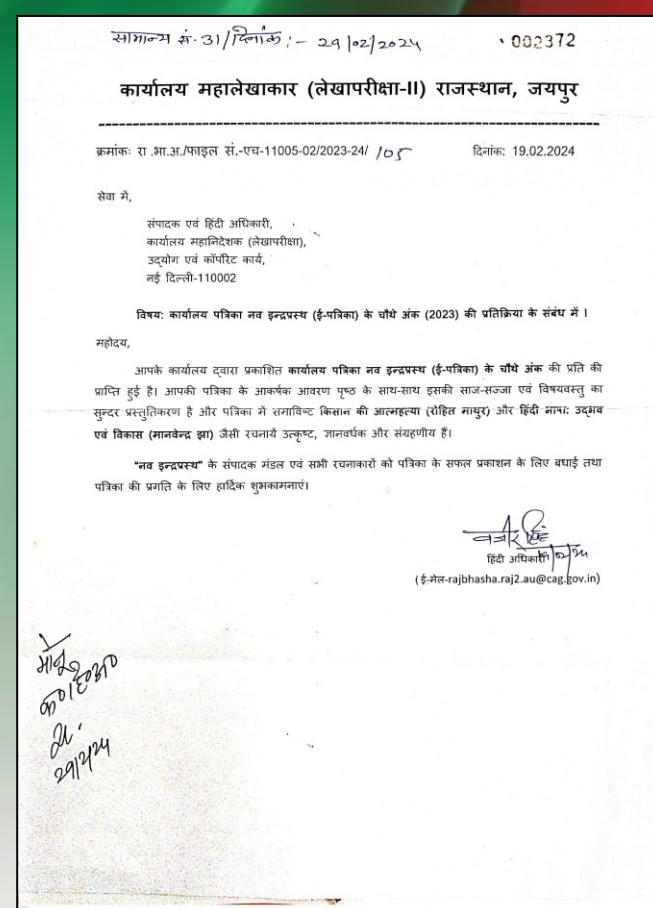
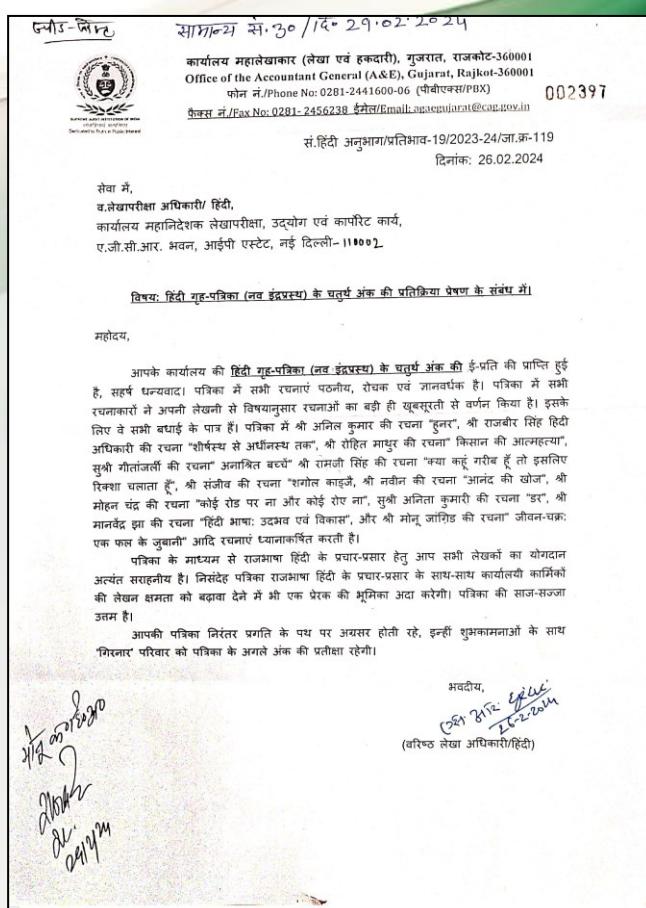
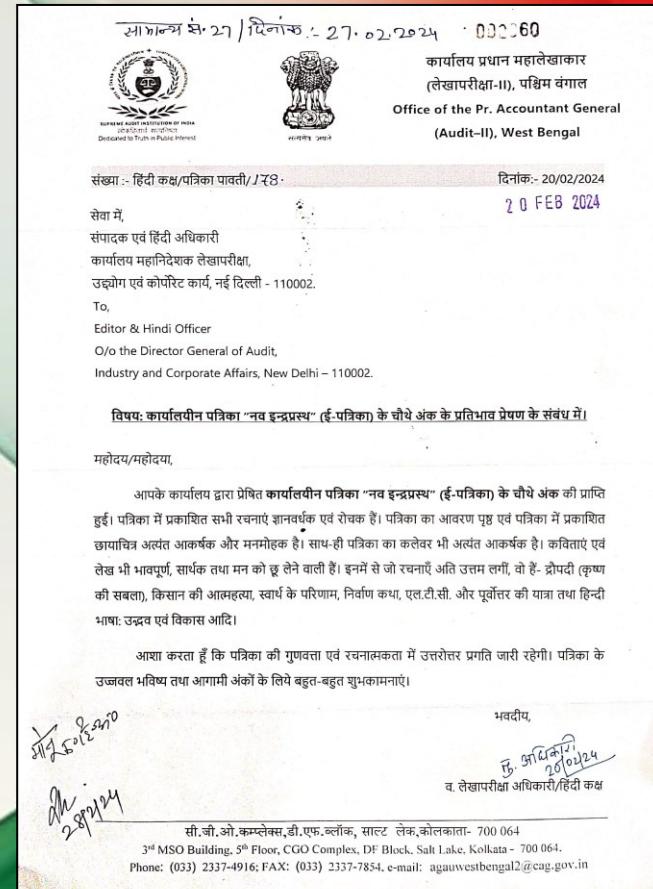
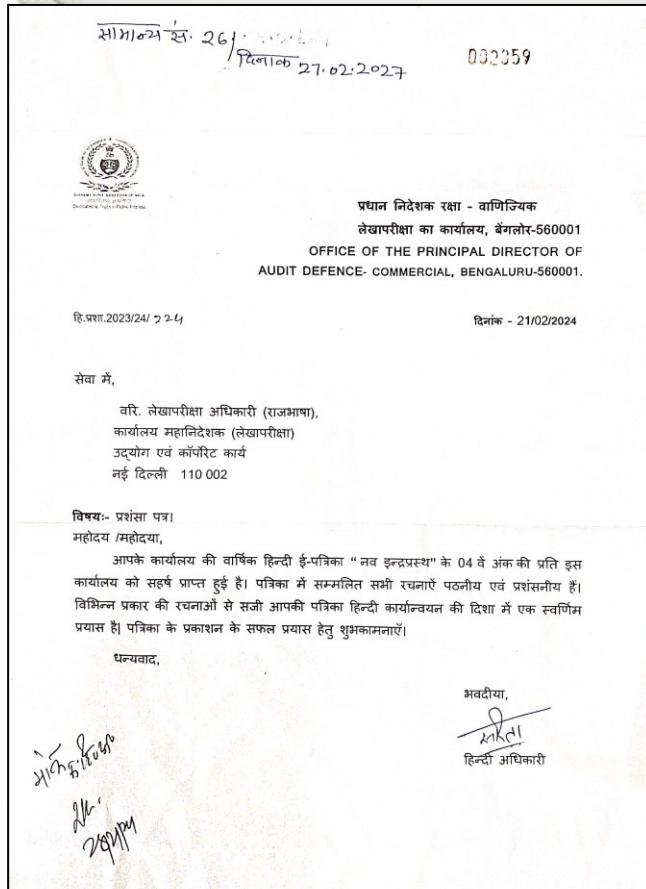
२१/२१२१

सामग्री क्र. १५ फिल्म्स, १९/२/२०२४

	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालडै, तेऩामपेट, चेन्नई - 600018
सं.प्र.मले.(लेप-II.)हि.अ./7-38हिंदी पत्रिका/2023-24/65 दिनांक: 19.02.2024	
<p>हिंदी अधिकारी (प्रशासन). कार्यालय महालेखाकार लेखापरीक्षा, उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य, ए.जी.सी.आर भवन, आई.पी.एस्टेट, नई दिल्ली-110 002.</p> <p>विषय: हिंदी ई-पत्रिका "नव इंद्रप्रस्थ" के चौथे अंक की अभिन्नतीकृति।</p> <p>महोदय,</p> <p>आपके कार्यालय से प्रकाशित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "नव इंद्रप्रस्थ" के चौथे अंक की प्राप्ति हुई। धन्यवाद।</p> <p>पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ पठनीय, रोधक एवं सराहनीय हैं। पत्रिका की साज-सज्जा बेहद आकर्षक है। श्री.राजबीर का लेख "शीर्षस्थ से अधीनस्थ तक", श्री.रामप्रकाश चौधरी का "एल टी सी और पूर्वीत की बाचा", श्री.मानवेन्द्र इडा की कविता "मैं" एवं मुश्ती गीताजीति की कविता "अनाक्रित बच्चे" विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। कामिकों के बच्चों की मुश्ती गीताजीति की कविता "अनाक्रित बच्चे" विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। कामिकों के बच्चों की विकास के लिए हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।</p> <p style="text-align: right;">अवदीया,</p> <p style="text-align: right;">हस्ता-</p> <div style="text-align: right; margin-top: 10px;">  (दी. चिकारी) हिंदी अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार(लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी </div>	

स्टेम्प सं. 21 /८० 22-02-2024	
 सत्यमव जयते	<p>कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा, प्लॉट नं. 5, सेक्टर 33-बी, दक्षिण मार्ग, चंडीगढ़-160 020</p> <p>OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), HARYANA PLOT NO.5, SECTOR 33-B, DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020</p> <p>सं.स्टिंडी कक्ष/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2023-24/७०५</p>
 SUPREME AUDIT INSTITUTIONS OF INDIA विधायिका विधायिका Dedicated to Truth & Public Interest	
दिनांक/Dated २२.०२.२०२४	
<p>सेवा में</p> <p>संभादक एवं हिन्दी अधिकारी कार्यालय महालेखाकार(लेखापरीक्षा) उदयोग एवं कोर्पोरेट कार्य नं. ३६८८ । ११०००२</p> <p>कार्यालयीन पत्रिका नव इंद्रप्रस्थ (ई-पत्रिका)के चौथे अंक (2023) के पत्रिका के घेषण के संबंध में।</p> <p>महोदय/महोदया,</p> <p>आपके कार्यालय की गृह-पत्रिका 'नव इंद्रप्रस्थ' की ई-पत्रि प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में संक्षेप सभी रचनाएँ पठनीय, रघिवक एवं प्रेरणादायक हैं। किसान की अनमोलत्वा, अनाश्रित कथे, आनंद की खोज, देखो सरस्वती पूजा आई आदि रचनाएँ काफी जानवर्धक हैं।</p> <p>आशा है पत्रिका की गृणकता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।</p> <p>पत्रिका के उत्तराल भविष्य और आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनायें।</p> <p style="text-align: right;">अधिकारी हिन्दी</p> <p style="text-align: right;">अधिकारी</p> <p style="text-align: right;">अधिकारी</p> <p style="text-align: right;">अधिकारी</p>	





कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक्क) राजस्थान, जयपुर
क्रमांक: राजस्थानप्रधानमंत्री/४२/निवारि-२/२०२३-२४
दिनांक: 05-03-2024

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी
संग्रहालय प्रधान मंत्रिमंडल के सचिवालय
उद्योग एवं संचार समंग, नई दिल्ली - 110002

निपात: नई दिल्ली नव इन्ड्रप्रस्थ का चतुर्थ अंक वाहिनी प्रतिविधि बोर्ड के सम्बन्ध में।

महोदय,
आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित नई इन्ड्रप्रस्थ का चतुर्थ अंक प्राप्त हुआ है। आप आपने बहुत-बहुत सारांशों का उत्तम विचारणा करके उद्योग एवं संचार समंग में विभिन्न विषयों पर विवेचन किया है। प्रत्येक में समर्थित नवीन विचारणा की जानकारी और उद्योग एवं संचार की विविध विधियों की विवेचन की गयी है। आपको इन विवेचनों की विविध विधियों की विवेचन की गयी है। आपको इन विवेचनों की विविध विधियों की विवेचन की गयी है।

प्रतिविधि के सभी रचनाकारों एवं संग्रहालय मंडल को प्रतिविधि के सफल प्रकाशन के लिए धन्यवाद और प्रतिविधि की उत्तरोत्तर प्रगति व उद्योग भविष्यत के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
Dr. SUBHASH CHAND YADAV
हिन्दी अधिकारी
राजस्थान जनुराम

मात्र ३८ / दिनांक: 06.03.2024

Signed by Subhash Chand Yadav
Date: 05-03-2024 14:55:31

भारतीय लेखापरीका और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
महानिदेशक लेखापरीका (केंद्रीय) का कार्यालय, मुंबई
O/o the DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
(CENTRAL),MUMBAI
C-25,Audit Bhavan, Bandra Kurla Complex,
Mumbai- 400 051
e-mail - pdacentralmumbai@caag.gov.in
सं.मि.ले.प.के / रा.भा.अ.प्रतिका/नव इन्ड्रप्रस्थ/2023-24-३८

दिनांक: 05/03/2024

सेवा में
हिन्दी अधिकारी /रा.भा.

कार्यालय प्रधानमंत्रीका लेखापरीका उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य, नई दिल्ली
ए.जी.सी.आर. भवन, आई.पी. एस्टेट, नई दिल्ली - 110002

विषय: कार्यालयीन हिन्दी ई-प्रतिका "नव इन्ड्रप्रस्थ" के चतुर्थ अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय

आपके कार्यालय द्वारा प्रेसित हिन्दी ई-प्रतिका "नव इन्ड्रप्रस्थ" के चतुर्थ अंक प्राप्त हुआ। सहर प्रध्याद्।

इस अंक का आवरण पृष्ठ, साज-सजाओं एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र अत्यधिक आकर्षक है। इस प्रतिका में समाविच्छ सभी रचनाएँ उत्कृष्ट मनोहर के रोधक हैं।

निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ इन सभी रचनाएँ उत्कृष्ट मनोहर के रोधक हैं।

क्र.सं.	रचनाकार	रचनाएँ
1	श्री राजवीर	शीर्षक से अधीनस्थ तक
2	श्री मानवेन्द्र शा	हिन्दी भाषा : उद्घाटन और विकास
3	सुश्री गीतांजलि	आज तमाचा मेरे गाल पर
4.	श्री नवीन	विवेचन कथा, आनंद की खोज
5.	श्री संजोव कुमार	सगाल काँजी
6.	सुश्री कविता शर्मा	करोना काल, पूछ की कामयाकी मेरी कामयाकी महत्व : स्त्री के लिए सार्वजनिक
7.	श्री राम प्रकाश चौधरी	देखो सरस्वती द्वजा आई, राल-टी-सी, और पूर्वीर की यात्रा
8.	श्री मोनू जागिर	जीवन चक्र : एक फल की जुबानी

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को प्रतिविधि के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं प्रतिविधि के निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय
वरिष्ठ लेखापरीका अधिकारी (राजभाषा)

मात्र ३८ / दिनांक: 06.03.2024

भारतीय लेखापरीका और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीका-1)
प्रशिक्षण बंगला
2. गवर्नेंट प्लॉस (परिषद), डेंट्री विल्डिंग्स,
कोलकाता - 700 001

Speed Post
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I)
WEST BENGAL :-
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS,
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax (033) 2213-3174
e-mail : agauwestbengal@caag.gov.in
* 002533

सं. हिन्दी कक्ष/हिन्दी प्रतिका/पावरी/386
दिनांक: 26.02.2024

12 MAR 2024

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीका,
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
ए.जी.सी.आर. भवन, आई.पी. एस्टेट,
नई दिल्ली-110002

विषय: कार्यालयीन प्रतिका "नव इन्ड्रप्रस्थ" (ई-प्रतिका) के चौथे अंक की पावरी संबंधी।

महोदय,

आपके कार्यालय का पत्रांक- प्रशा./रा.भा./ नव इन्ड्रप्रस्थ/12/2023-24/24, दिनांक 14.02.2024 के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी प्रतिका का आवरण पृष्ठ सुन्दर एवं आकर्षक है। "नव इन्ड्रप्रस्थ" में समावित सभी रचनाएँ रोचक, प्रसन्नताएँ एवं जानवर्कैन हैं। विवेचन रूप से श्री राजवीर की रचना "शीर्षक से अधीनस्थ तक", श्री मानवेन्द्र शा की रचना "माँ", सुश्री गीतांजलि की रचना "अविनियत बड़े", श्री रोहिणी मानव जी की रचना "किसान की आदतस्वरूप", श्री रामजी सिंह की रचना "दया कहूँ गरीब हूँ तो रिक्षा हूँ" इत्यादि सराहनीय हैं। आशा है कि यह प्रतिका हिन्दी के जनर-प्रसार के लिए उत्त्योगी सिद्ध होगी।

प्रतिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को प्रतिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं प्रतिका के उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएँ।

भवदीय
हिन्दी अधिकारी

मात्र ४२ / दिनांक: 15.03.2024

भारतीय लेखापरीका और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
महानिदेशक लेखापरीका (केंद्रीय) का कार्यालय, मुंबई
Office of the Director General of Commercial Audit, Mumbai
C-21, Audit Bhavan, S. D. S. S. S. S. Complex, Mumbai - 400 051
Telephone: 022-29903800, Email: pdcamumba@caag.gov.in
सं. श्रीमती परा.भा.लेखापरीका/ १८६
दिनांक: 18/03/2024

मात्र ४२ / दिनांक: 19 MAR 2024

सेवा में,
संपादक एवं हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीका,
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
ए.जी.सी.आर. भवन, नई दिल्ली - 110002

विषय: हिन्दी प्रतिका "नव इन्ड्रप्रस्थ" के चौथे अंक के के संबंध में।

महोदय/महोदया,

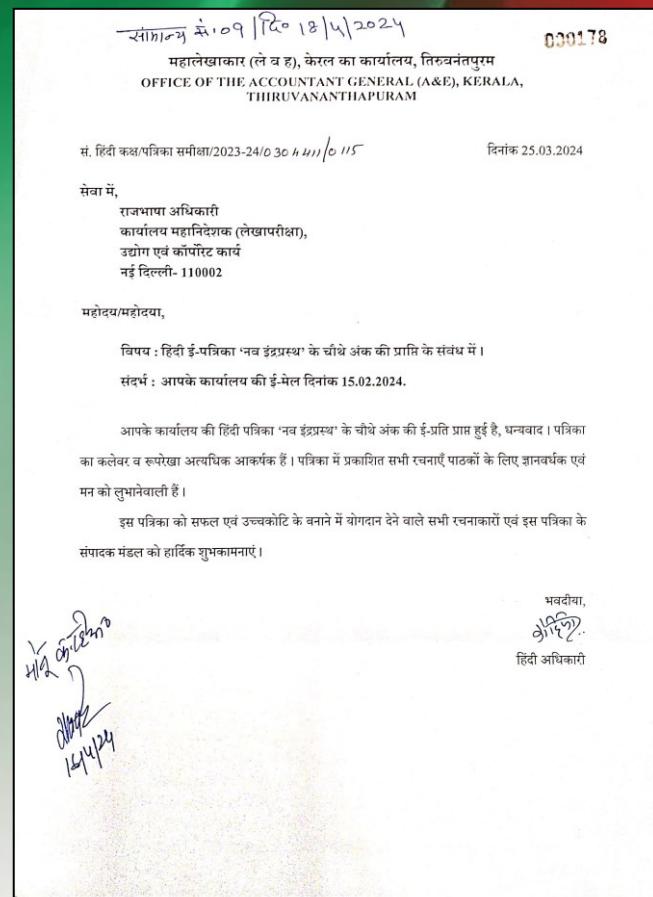
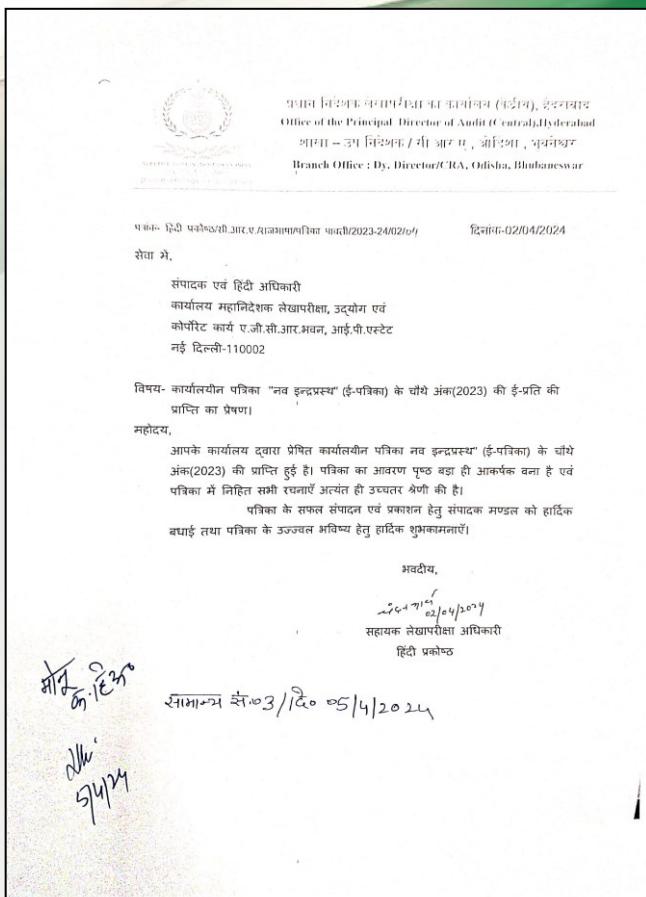
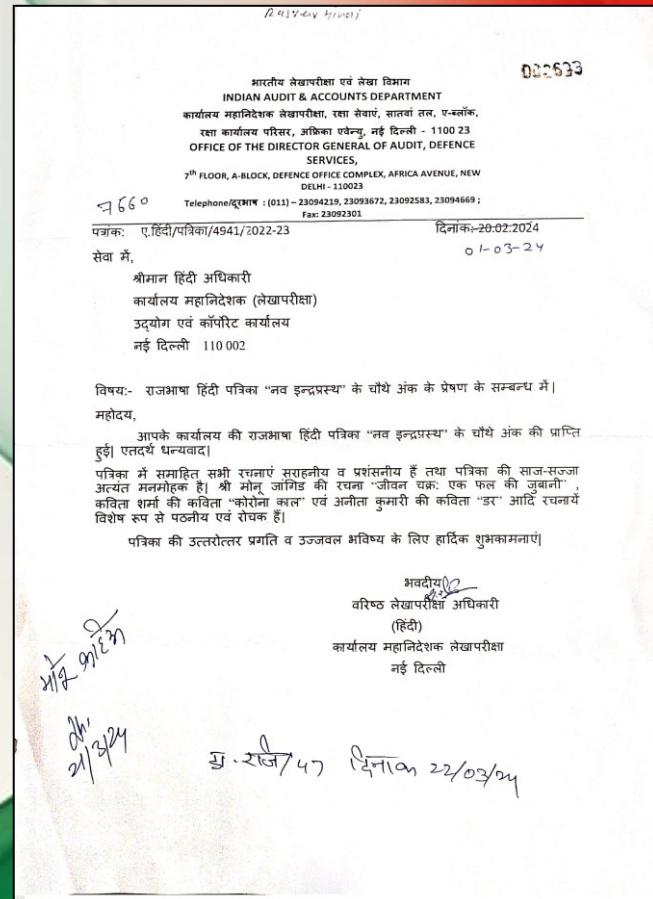
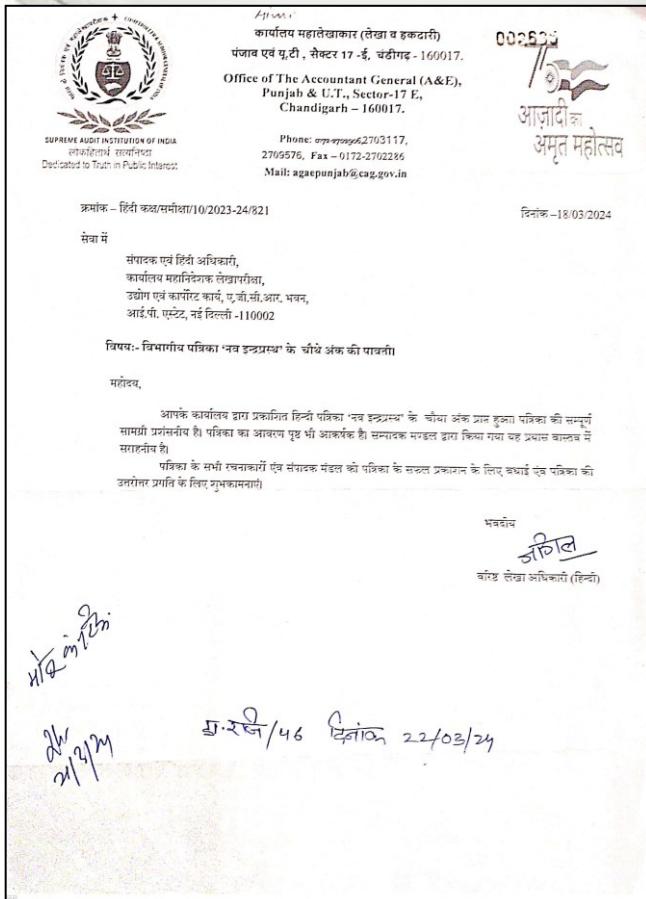
आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी प्रतिका "नव इन्ड्रप्रस्थ" के चौथे अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तरीके धन्यवाद। प्रतिका प्राप्ति पृष्ठ से अंतिम पृष्ठ तक अत्यंत आकर्षक है। प्रतिका में समिलित सभी रचनाएँ लोकप्रिय एवं जानकार तथा उत्कृष्ट कोटि की हैं। विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ प्रसारीय हैं:-

क्र.सं.	रचनाकार	रचनाएँ
1.	श्री राजवीर	शीर्षक से अधीनस्थ तक
2.	सुश्री कविता शर्मा	पूछ की कामयाकी मेरी कामयाकी महत्व : स्त्री के लिए सार्वजनिक
3.	सुश्री गीतांजलि	आनंद की खोज
4.	श्री रामजी सिंह	कथा कहूँ गरीब हूँ तो रिक्षा चलाता हूँ
5.	श्री नवीन	आनंद की खोज
6.	सुश्री अनिता कुमारी	डर
7.	सुश्री गीतांजलि	आज तमाचा मेरे गाल पर
8.	श्री मोनू जागिर	जीवन चक्र : एक फल की जुबानी
9.	श्री मानवेन्द्र शा	हिन्दी भाषा : उद्घाटन और विकास
10.	श्रीमती हेमलत शर्मा	द्रौपदी (कृष्ण की सबल)

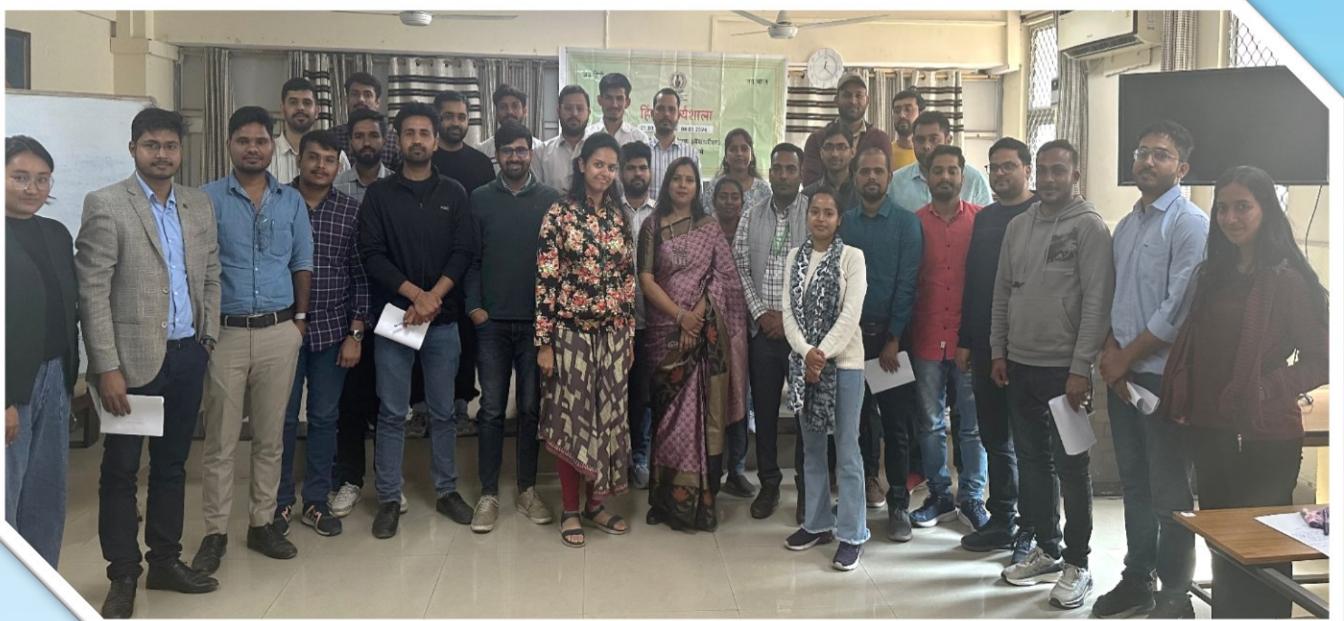
विविध गतिविधियों से संबंधित धन्यवादों का प्रस्तुतीकरण सराहनीय है। प्रतिका प्रकाशन के उत्तरोत्तर भविष्य की कामना के साथ प्रतिका के मुश्तक संघटन एवं प्रकाशन के सिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखापरीका अधिकारी/प्रशिक्षण समिति

मात्र ४२ / दिनांक: 21/03/2024



हिंदी कार्यशाला-2024



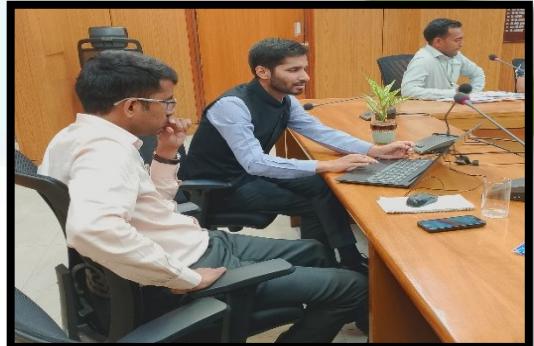
दिनांक: 01.03.2024 को आयोजित हिंदी कार्यशाला की समाप्ति पर अतिथि संकाय श्रीमती सुनीता यादव, सहायक निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग एवं स्थानीय संकाय श्री राजबीर, हिंदी अधिकारी के साथ कार्यालय के नवनियुक्त सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी एवं लेखापरीक्षक



दिनांक: 04.03.2024 को आयोजित हिंदी कार्यशाला की समाप्ति पर स्थानीय संकाय श्री राजबीर, हिंदी अधिकारी के साथ कार्यालय के नवनियुक्त कार्मिक



हिंदी पखवाड़ा-2024 के दौरान दिनांक: 19.09.2024 को आयोजित हिंदी कार्यशाला की समाप्ति पर
अतिथि संकाय सदस्य सुश्री पूजा साव, वरिष्ठ अधिकारी (राजभाषा) एवं स्थानीय संकाय सदस्य
श्री राजबीर, हिंदी अधिकारी के साथ कार्यालय के प्रतिभागी



हिंदी पखवाड़ा-2024 के दौरान दिनांक: 20.09.2024 को आयोजित “हिंदी के ई-टूल्स” विषय पर हिंदी
कार्यशाला में अतिथि संकाय सदस्य श्री ओम प्रकाश, सहायक आचार्य, दिल्ली विश्वविद्यालय,
श्री सुशांत रंजन, निदेशक कार्यशाला के प्रतिभागियों के साथ

हिंदी भाषा (पारंगत) प्रशिक्षण जुलाई-नवंबर 2024 सत्र के दौरान
श्रीमती सुनीता यादव, सहायक निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान,
राजभाषा विभाग कार्यालय के प्रशिक्षणार्थीयों को प्रशिक्षण देते हुए



दिनांक 07 अक्टूबर 2024 से 09 अक्टूबर 2024 तक चंडीगढ़ में आयोजित भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग की नाँथ जोन के टेबल टेनिस टूर्नामेंट के विमिन्स सिंगल में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर कार्यालय की सुश्री अंजली रोहिल्ला, लेखापरीक्षक ट्रॉफी से सम्मानित करते हुए



हम गर्व
करते हैं...

लेखापरीक्षा शब्दावली

क्र.सं.	अंग्रेजी शब्द	हिंदी शब्द
1	Affiliated	संबद्ध
2	Allotment	आबंटन
3	Annexure	अनुलग्नक
4	Attached Office	संबद्ध कार्यालय
5	Audit Findings	लेखापरीक्षा निष्कर्ष
6	Audit Scope	लेखापरीक्षा कार्यक्षेत्र
7	Blue Print	रूपरेखा, खाका
8	Budget and Expenditure	बजट तथा व्यय
9	Capital Outlay	पूँजीगत परिव्यय
10	Compliance Audit	अनुपालन लेखापरीक्षा
11	Conformity with	के अनुरूप
12	Contempt of Court	न्यायालय की अवमानना
13	Conversion	संपरिवर्तन
14	Conversion Charges	संपरिवर्तन प्रभार
15	Demarcation	सीमांकन
16	Deviations	विपथन
17	Effective and Efficient Administration	प्रभावी एवं कुशल प्रबंधन
18	Encroached Plot	अतिक्रमित भूखंड
19	Executive Summary	कार्यकारी सार
20	Feasible	व्यवहार्य
21	Financial Crisis	वित्तीय संकट
22	Fluctuation	उतार चढ़ाव
23	Follow-up Action	अनुवर्ती कार्रवाई
24	Honorary Member	मानद सदस्य
25	Impose	अधिरोपित करना

26	Land Revenue Department	भू-राजस्व विभाग
27	Lease Agreement	पट्टा करार
28	Leased Properties	पट्टे पर दी गई संपत्तियाँ
29	Lessee	पट्टेदार
30	Lessor	पट्टाकर्ता
31	Lump-Sum	एकमुश्त
32	Methodology	कार्यपद्धति
33	Mutation	नामांतरण
34	Nominal	बहुत कम
35	Organisational Setup	संगठनात्मक ढाँचा
36	Perpetual Lease	स्थायी पट्टा
37	Prescribed	निर्धारित किया गया
38	Public Accounts Committee	लोक लेखा समिति
39	Rehabilitation Lands	पुनर्वास भूमियाँ
40	Remedial Actions	उपचारात्मक कार्रवाई
41	Robust Monitoring	मजबूत निगरानी
42	Sale Permission	बिक्री अनुमति
43	Scrutiny	संवीक्षा
44	Show-cause notice	कारण बताओ नोटिस
45	Stipulates	वर्णित करता है
46	Subsidy	आर्थिक सहायता देना
47	Substitution	प्रतिस्थापन
48	Traced	पता किया
49	Transaction Value	संव्यवहार मूल्य
50	Unearned Increase	अनर्जित वृद्धि

अभिमत

“आपके स्नेह के हम आभारी हैं कि आपने हमें अपने अभिमत भेजे। पत्रिका के बेहतर भविष्य के लिए इसी प्रकार अपनी राय एवं सुधार संबंधित सुझाव देकर हमारा उचित मार्गदर्शन करते रहें।”

रचनाकारों से अनुरोध

- नव इन्द्रप्रस्थ के अगले अंक के लिए सभी रचनाओं का स्वागत है।
- कृपया रचनाकार अपने मौलिक, अप्रकाशित, अप्रसारित एवं श्रेष्ठ रचनाएं प्रकाशन के लिए भेजें।
- रचना के साथ अपने 02 पासपोर्ट साइज फोटो तथा रचना की मौलिकता एवं अप्रकाशित होने का प्रमाण पत्र अवश्य लगाएं।
- सुपाठ्य रचनाएं कागज की एक और 02 टंकित/लिखित प्रतियाँ (सॉफ्ट/हार्ड) सहित भेजें।
- रचना का उपयुक्त शीर्षक दिया हो।
- रचनाकार रचना भेजते समय उसकी एक प्रति अपने पास भी सुरक्षित रख लें।

*कार्यालय एवं राजभाषा संबंधित लेखों का विशेष रूप से स्वागत है।

संपादक

(नव इन्द्रप्रस्थ)

महानिदेशक लेखापरीक्षा, उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य,

ऑडिट भवन, आई.पी. एस्टेट,

नई दिल्ली - 110002

फोन. नं. 011-23702357

ई-मेल: pdaica@cag.gov.in



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,

उद्योग एवं कॉर्परेट कार्य,

ऑडिट भवन, आई.पी. एस्टेट,

नई दिल्ली - 110002